RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(जुलाई-अगस्त 2023, संयुक्तांक)

चंद्रयान-3
ने भेजी चन्द्रमा की तस्वीरें

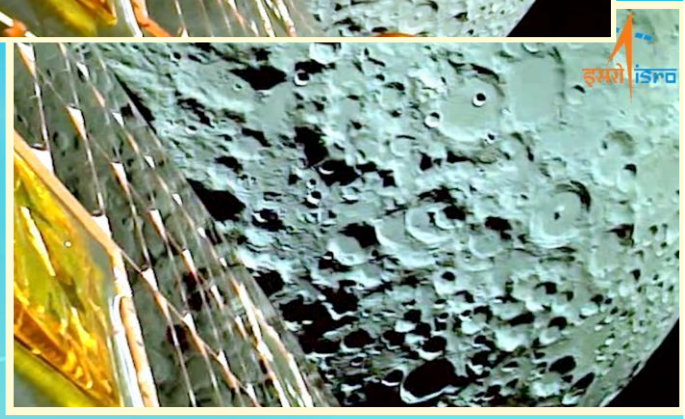

अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम

सानन्दमानन्दवने वसन्तं आनन्दकन्दं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये॥

जो भगवान् शंकर आनन्दवन काशी क्षेत्र में आनन्दपूर्वक निवास करते हैं, जो परमानन्द के निधान एवं आदिकारण हैं, और जो पाप समूह का नाश करने वाले हैं, मैं ऐसे अनाथों के नाथ काशीपति श्री विश्वनाथ की शरण में जाता हूँ।

श्री काशी विश्वनाथ धाम

श्रावण

वि.सं. 2080

अगस्त 2023

वर्षा ऋतु

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		श्रावण अधिकमास पूर्णिमा 1 श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	2 श्रावण कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	3 श्रावण कृष्ण पक्ष द्वितीया	विभुवन संकष्टी चतुर्थी 4 श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	5 श्रावण कृष्ण पक्ष चतुर्थी
6 श्रावण कृष्ण पक्ष पंचमी	7 श्रावण कृष्ण पक्ष षष्ठी	8 श्रावण कृष्ण पक्ष सप्तमी	9 श्रावण कृष्ण पक्ष अष्टमी	10 श्रावण कृष्ण पक्ष नवमी	11 श्रावण कृष्ण पक्ष दशमी	परम एकादशी 12 श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी
अधिक प्रदोष व्रत 13 श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	14 श्रावण कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	स्वतंत्रता दिवस 15 श्रावण कृष्ण पक्ष चतुर्दशी/अमावस	अधिकमास समाप्त 16 श्रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या	सिंह संक्रान्ति चन्द्र दर्शन 17 श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	18 श्रावण शुक्ल पक्ष द्वितीया	हरियाली तीज 19 श्रावण शुक्ल पक्ष तृतीया
20 श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्थी	नाग पञ्चमी 21 श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	कल्कि जयन्ती 22 श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	23 श्रावण शुक्ल पक्ष सप्तमी	24 श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी	वरलक्ष्मी व्रत 25 श्रावण शुक्ल पक्ष नवमी	26 श्रावण शुक्ल पक्ष दशमी
पुत्रदा एकादशी 27 श्रावण शुक्ल पक्ष एकादशी	प्रदोष व्रत 28 श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	ओणम 29 श्रावण शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	रक्षा बन्धन 30 श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	गायत्री जयन्ती श्रावण पूर्णिमा 31 श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा/प्रतिपदा		

होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा॥

जो कुछ राम ने रच रखा है, वही होगा। तर्क करके कौन विस्तार बढ़ाये।

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

जुलाई-अगस्त, 2023 संयुक्तांक
वर्ष : 23 अंक : 07-08

संपादक
कृपाशंकर

सह संपादक
डॉ. प्रदीप कुमार

कार्यकारी संपादक
डॉ. नीलम कुमारी

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन न. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

अंतरिक्ष में विश्वगुरु भारत के बढ़ते कदम : चंद्रयान 3... -प्रो. राकेश सिंघई 05

पर्यावरण प्रदूषण : समस्या और समाधान - डॉ. वेद प्रकाश.....07

भारतीय नारीवाद की संकल्पना - डॉ. शिवा शर्मा.....10

शिक्षा के मंदिर में भेदभाव की भावना - सोनम लववंशी.....11

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का वैज्ञानिक आधार - डॉ. नीलम कुमारी.....12

भारत का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद - सोनम.....15

स्वतंत्रता संग्राम में पश्चिम उत्तर प्रदेश की ..... -प्रो. सुनील दत्त त्यागी....17

क्या है कृत्रिम बुद्धि तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ... - मृत्युंजय दीक्षित.....18

नई शिक्षा नीति देश दुनिया को समृद्ध करने की ... - पंकज जगन्नाथ 20

समान नागरिक संहिता आज देश की अवश्यकता है - डॉ. प्रवेश कुमार.....22

जातीय जंजाल में उलझा मणिपुर - प्रमोद भार्गव.....24

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय.....

सम्पूर्ण देशों में अधिक

जिस देश का उत्कर्ष है

वह देश मेरा देश है वह देश भारत वर्ष है

आज भारत अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस अमृत काल मे भारत निरतंर विभिन्न क्षेत्रों में नए कीर्तिमान स्थापित करते हुए अपनी खोई हुई विश्व गुरु की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने की ओर अग्रसर है। गत 14 जुलाई 2023 को चंद्रयान 3 का सफल प्रक्षेपण इस बात का प्रमाण है कि भारत विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में किसी देश से कम नही है। अब तक केवल अमेरिका, सोवियत रूस व चीन को चंद्रमा की सतह पर जाने वाला देश माना जाता था परंतु अब मिशन चंद्रयान 3 जैसे अभियान जिसके माध्यम से भारत विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में अपने आत्म गौरव व आत्म सम्मान को पुनः प्राप्त कर रहा है, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर जाने वाला विश्व का चौथा देश होगा। वैसे तो विज्ञान व तकनीकी वैदिक काल से ही भारत की ज्ञान परंपरा का हिस्सा रहा है। महर्षि भारद्वाज ने अपने 'यंत्र सर्वस्व' नामक ग्रंथ में सभी प्रकार के यंत्र को बनाने व चलाने की विधि का वर्णन किया है। जिससे यह बात तो स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन काल से ही ऋषियों और मुनियों के ज्ञान के साथ-साथ विद्वानों व वैज्ञानिकों के ज्ञान का केंद्र भी रही है और यह भी सत्य है कि ज्ञान के सूर्य का उदय सदैव पूरब से ही हुआ है ।भारत वैदिक काल से ही रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान, गणित धातु, भौतिकी इंजीनियरिंग विज्ञान, आयुर्वेद चिकित्सा, कृषि, पशुपालन, जहाज निर्माण तकनीकी वैमानिक तकनीकी का देश रहा है। परंतु 700 साल की परतंत्रता और 70 साल के वनवास के कालखंड में विस्मृत ज्ञान परंपरा को पुनः विकसित, पल्लवित पुष्पित व प्रमाणित करने का प्रयास कर रहा है और अब वह दिन दूर नहीं जब चन्द्रयान 3 की सफलता हमे महर्षि भारद्वाज की वैदिक वैमानिक तकनीक को आधुनिक जामा पहनाएगी और भारत के विश्व गुरु बनने का सपना साकार होगा। केशव संवाद पत्रिका का यह जुलाई-अगस्त संयुक्तांक आजादी के महासंग्राम में अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले वीर वीरांगनाओं, भारतीय सभ्यता व संस्कृति के वैज्ञानिक आधार, नारीवाद की भारतीय संकल्पना, विज्ञान के क्षेत्र में नवीन आविष्कार, भारतीय शिक्षा पद्धति को समृद्ध करती नई शिक्षा नीति, समान नागरिक कानून, पर्यावरण प्रदूषण व अंतरिक्ष मे बढ़ते भारत के कदम जैसे विषयों को लेकर अपने सुधि पाठकों के लिए इस आशय के साथ प्रेषित हैं कि निकट भविष्य में भारत मां का मस्तक ऊंचा हो और हम गर्व से कह सकें-

परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं, समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम् ।।

।।भारत माता की जय।।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

अंतरिक्ष में विश्वगुरु भारत के बढ़ते कदम : चंद्रयान 3 के परिप्रेक्ष्य में

प्रो. डॉ. राकेश सिंघई

आज विश्व में विमान टेक्नोलॉजी बहुत ही विकसित हुई है, पर भारत में यही टेक्नोलॉजी–विमान शास्त्र हजारों साल या महाभारत काल से भी पूर्व इसकी रचना और विकास हुआ था।

महर्षि भारद्वाज हमारे उन प्राचीन वैज्ञानिको मे से एक महान वैज्ञानिक थे, जिनके पास विज्ञान की महान दृष्टि थी। महर्षि भारद्वाज ने "यंत्र सर्वस्व" नामक ग्रंथ लिखा था, जिसमें सभी प्रकार के यंत्र को बनाने और चलाने की विधि का वर्णन किया गया है और इसमें से एक भाग विमान शास्त्र है। इस ग्रंथ के आठ अध्यायों में विमान बनाने की प्रक्रिया है। और इन आठ अध्यायों में 100 खंड है। जिसमें विमान बनाने की टेक्नोलॉजी का विस्तारित रूप से वर्णन किया है। महर्षि भारद्वाज ने इसमें 500 प्रकार के विमान बनाने की विधि का उल्लेख किया है। वेदों में विमान संबंधी उल्लेख अनेक स्थलों पर मिलते है। वाल्मीकि रामायण में पुष्पक विमान, ऋग्वेद में कम से कम 100 से ज्यादा बार विमानों का उल्लेख किया गया है।

यह मिशन भारत के लिए बेहद खास है। इसमें जियो पॉलिटिक्स भी शामिल है। विकसित देश अमेरिका और हमारा चिर परिचित प्रतिद्वंदी देश चीन चांद पर अपने स्थायी अड्डे बनाने की तैयारी कर रहे हैं। यदि विश्व पटल पर दृष्टिपात करें तो, भारत जिसके पास स्वयं की विकसित वैमानिक टेक्नोलॉजी वैदिक काल से रही हो, इस होड़ से कैसे पीछे रह सकता था। हो सकता है कि भारतीय वैदिक वैमानिक तकनीक आज के परिप्रेक्ष्य में उपयोगी, व्यवहारिक एवं क्रियान्वयन योग्य न हो, पर हमारी किसी समय की विश्व गुरु बनने की इस विधा में सोच और ग्रंथों की उपलब्धता यही बताती है कि उन ग्रंथों के सिद्धांतों का, विचारों का, सूत्रों का अर्थ वर्तमान की तकनीक से जोड़कर अपनी स्वयं–सिद्धा तकनीक विकसित की जा सकती है। यही सोच हमें पुनः विश्व गुरु बना सकती है। इस तरह की खोज की सफलता और विफलता इस बात से तय होती है कि, किसने उन्नत तकनीक बनाई है। कोई किसके साथ इसे साझा करना चाहता है? इसका इस्तेमाल कैसे होगा? मंगल हो या चांद ऐसी खोजें युवाओं को प्रेरित करती हैं। इसके चलते उन्हें स्पेस साइंस में करियर बनाने का प्रोत्साहन मिलता है।

भारत ने अपने चन्द्र यान मिशन का प्रारम्भ, वर्ष 2008 को पहले चंद्रयान–1 को सफलतापूर्वक चांद की कक्षा में स्थापित कर एक इतिहास रच डाला था। चंद्रयान–2 को 2019 में सफलतापूर्वक चांद की कक्षा में स्थापित कर दिया गया था, लेकिन तकनीकी खराबी के कारण यह मिशन सफल नहीं हो पाया था। चंद्रयान–2 जो हासिल नहीं कर सका उसे चंद्रयान–3 के जरिए हासिल करने की कोशिश की जा रही है। चंद्रयान–3 भारत का एक चंद्र मिशन है, जो 14 जुलाई,

ISSN No. 2581-3528

2023 को लॉन्च किया गया था। इस मिशन में, चन्द्रयान–3 को चंद्रमा की दक्षिणी ध्रुव पर उतरना है, और वैज्ञानिक प्रयोग करना है। चंद्रयान–3 का प्रक्षेपण सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा, भारत से हुआ था।

चंद्रयान–3 मिशन में करीब 600 करोड़ रुपये की लागत आएगी। आगे चलकर मिशन की जटिलताएं बढ़ेंगी। तब कीमत में भी इजाफा होगा। हालांकि ये मिशन जरूरी हैं। इनके पीछे तर्क है। इससे भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संस्थान (इसरो) की क्षमता में बढ़ोतरी होगी। सैटेलाइट आधारित उपयोगों को अंजाम देने में यह मिशन भारत के लिए मददगार होगा। इससे इंजीनियरों और वैज्ञानिकों का शानदार पूल भी बनाने में मदद मिलेगी। भारत किसी पर निर्भर नहीं रह सकता है। 1990 के दशक में भारत को क्रायोजेनिक तकनीक को हासिल करने से रोका जा चुका है। अमेरिका उसके रास्ते में अड़ंगा बना था। हालांकि, यह भी सच है कि अकेले अंतरिक्ष या चांद पर खोज के लिए संसाधनों की जरूरत होगी। ऐसे में उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग की जरूरत पड़ेगी। भारत के पास वर्ष 2020 से राष्ट्रीय स्पेस पॉलिसी है, जिसके अंतर्गत इस क्षेत्र को अन्य क्रियान्वयकों के लिए खोल दिया गया है।

इसको जानना आवयशक है की वैज्ञानिकों के लिए चांद खास क्यों है। वैज्ञानिकों का मानना है कि चूंकि, चांद पृथ्वी से ही टूट कर बना है, इससे से हमें धरती के प्रारंभिक इतिहास को समझने का मौका मिलेगा। पृथ्वी के साथ चन्द्रमा के रिश्ते और सूर्य–प्रणाली को भी गहराई से समझने का मौका मिलेगा। चन्द्रमा पर पृथ्वी की अपेक्षा गुरुत्वाकर्षण कम होता है और विकिरण अधिक पाया जाता है। वैज्ञानिक अब इस बात की खोज कर रहे है कि विकिरण कैसे इंसान के अंदर पाई जाने वाली कैंसर जैसी बीमारियों को रोकने में प्रभावी है। साथ ही वैज्ञानिक इस बात की भी खोज कर रहे है कि कैसे विकिरण इंसान की हड्डी और मांसपेशियों को ठीक कर सकता है। चंद्रमा पर कई बेशकीमती खनिज भी मौजूद हैं। वैज्ञानिक अब इस बात पर जोर दे रहे हैं कि कैसे चन्द्रमा को स्पेस स्टेशन के रूप में इस्तेमाल कर सके, ताकि भविष्य में दूसरे ग्रह पर जाने में आसानी हो। यहां वैज्ञानिक कई उपकरणों का टेस्ट कर सकती है। आसान भाषा में कहा जाए तो वैज्ञानिक चांद को अपना टेस्ट लैब बना सकती है ताकि अंतरिक्ष में होने वाली सभी गतिविधियों पर नजर बना रहे और साथ ही दूसरे ग्रह पर जीवन ढूंढ़ने के प्रक्रिया में और तेजी आ सके।

चंद्रयान–3 के निर्माण में अत्याधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल किया गया है। चंद्रयान 3 का पेलोड एक लैंडर, एक रोवर और एक प्रोफेलशन मॉड्यूल से बना है। लैंडर चंद्रमा की सतह पर उतरेगा और रोवर चंद्रमा की सतह पर वैज्ञानिक प्रयोग करेगा। इसका मुख्य मकसद ऐसी उड़ानों के लिए जरूरी तकनीकी विकास को दिखाना और उसे सबके सामने लाने का है। इस बार के लैंडर में सॉफ्ट लैंडिंग की क्षमता है। ये चांद के एक खास जगह पर रोवर को लैंड कराने की क्षमता रखता है। इसके जरिए चांद की सतह का केमिकल परीक्षण किया जा सकता है। लैंडर और रोवर अत्याधुनिक उपकरणों से लैस है जिनके जरिए वो चांद की सतह पर जरूरी डेटा जुटाएंगे।

चंद्रयान–3 मिशन से हमें चंद्रमा के बारे में नई जानकारी मिलेगी और इसके माध्यम से भारत की वैज्ञानिकता को गर्व की अनुभूति मिलेगी। जैसे कि–

• चंद्रमा की दक्षिणी ध्रुव पर पानी की बर्फ की उपस्थिति।

• चंद्रमा की सतह और उसकी संरचना।

• चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र

• चंद्रमा के वायुमंडल

चंद्रयान 3 मिशन को वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। इसमें उन्नत संचार तंत्र, ऊर्जा प्रबंधन और उच्च क्षमता के बैटरी शामिल हैं। इसके अलावा, एक औचक रडार और नए प्रकार के उपकरणों का भी उपयोग किया जाएगा।

चंद्रयान 3 की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं–

• यह मिशन चंद्रमा की दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला भारत का पहला मिशन है।

• यह मिशन चंद्रमा की सतह पर वैज्ञानिक प्रयोग करने वाला भारत का सबसे उन्नत मिशन है।

• इस मिशन में शामिल लैंडर और रोवर भारत द्वारा विकसित सबसे उन्नत अंतरिक्ष यान हैं।

• इस मिशन के सफल होने से भारत को अंतरिक्ष क्षेत्र में एक नई पहचान मिलेगी।

• यह मिशन भारत को चंद्रमा पर उतरने वाले सोवियत रूस, अमेरिका और चीन के बाद चौथे देश के रूप में स्थापित करेगा।

• उल्लेखनीय है की विश्व के अविकसित देशों में से एकमात्र भारत देश इस उपलब्धि को प्राप्त करने जा रहा है।

चंद्रयान 3 मिशन के लिए तैयारी करते समय, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी देखा गया है। इस मिशन के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने अन्य देशों के अंतरिक्ष संगठनों के साथ सहयोग किया है। इसके अलावा, इस मिशन के लिए बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों, अभियंताओं और विशेषज्ञों का चयन किया गया है। इससे यह साबित होता है कि चंद्रयान–3 का मिशन अग्रणी और महत्वपूर्ण है और भारत अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनी प्रगति को दिखाने के लिए तत्पर है। चंद्रयान–3 की सफलता हमें महर्षि भारद्वाज की वैदिक वैमानिक तकनीक को आधुनिक जामा पहनाएगी और इस सम्बन्ध में हमारी विश्वगुरु की पुरानी प्रतिष्ठा को प्रमाणिक रूप से सम्पूर्ण विश्व में स्थापित करेगी।

(लेखक विश्वविद्यालय प्रौद्योगिकी संस्थान राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय शिवपुरी (मध्य प्रदेश) में संचालक के पद पर कार्यरत हैं)

ISSN No. 2581-3528

पर्यावरण प्रदूषण : समस्या और समाधान

डॉ. वेदप्रकाश

सारांश : हमारे सौरमंडल के ज्ञात ग्रहों में पृथ्वी इकलौता ऐसा ग्रह है। जहां जीवन मुस्कुरा रहा है, इसका कारण यहां का पर्यावरण है। पर्यावरण क्या है, इसकी विवेचना अलग–अलग क्षेत्रों में काम कर रहे व्यक्तियों द्वारा विभिन्न–विभिन्न तरीके से की जाती है। भौतिक वैज्ञानिक इसे भौतिक पर्यावरण के रूप में उल्लेखित करते हैं। जीव वैज्ञानिक इसे जैविक पर्यावरण के रूप में देखते हैं। तथा इसमें जैवमंडल के जीवित जीवों को सम्मिलित करते हैं। वही समाजिक वैज्ञानिक इसे सामाजिक आर्थिक संगठनात्मक पर्यावरण के रूप में परिभाषित करते हैं। सामान्य शब्दों में पर्यावरण का आशय जैविक एवं अजैविक घटकों एवं उनके आसपास के वातावरण के सम्मिलित रूप से है। जो पृथ्वी पर जीवन के आधारों को संभव बनाता है। अतः पर्यावरण एक प्राकृतिक परिवेश है, जो पृथ्वी पर जीवन को विकसित, पोषित एवं समाप्त होने में मदद करता है। विश्व के समस्त प्राणियों में मानव सबसे ज्यादा प्रज्ञ और चिन्तनशील प्राणी है। आदिकाल में आद्यावधि वह अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रगति पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर है। कभी बादल की गरज और बिजली की चमक को ईश्वरीय प्रकोप समझकर डर जाने वाला, नंग–धड़ंग, खाना–बदोश मानव एक ओर आज बिना पंख के उड़ रहा है। घर बैठे देश–विदेश की खबरें ले रहा है, चाँद के बाद मंगल पर उतर चुका है। वहीं दूसरी ओर सुख–सुविधाओं के चक्कर में वह कुछ ऐसी गलतियाँ भी करता जा रहा है। जो उसके स्वयं के साथ–साथ सम्पूर्ण भू–जीवन के लिये अभिशाप बनती जा रही हैं। मानव द्वारा की जाने वाली उन गलतियों में सबसे बड़ी गलती है– पर्यावरण को प्रदूषित किया जाना है। जिसे पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं। इसमें दो राय नहीं कि जब तक हमारा पर्यावरण स्वच्छ नहीं होगा, तब तक सर्वांगीण विकास असंभव होगा। जीवन का उद्देश्य अत्यधिक धन नहीं अत्यधिक सुख और शांति प्राप्त करना है। धन के द्वारा न तो सुख–शांति खरीदी जा सकती है। और न ही निर्भय–नैरोग्य जीवन। 'स्वास्थ्य ही जीवन है' के सिद्धांत पर संकल्प पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। अच्छे स्वास्थ्य का निर्माण अच्छे वातावरण में ही सम्भव है। जिसे हम पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण वह आवरण है। जिसमें हम सभी धरती के प्राणी रहते हैं। हमारे आस–पास की प्रत्येक वस्तु एवं दृश्य–अदृश्य जीवन एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। तथा पर्यावरण को सन्तुलित रखते हैं। पर्यावरण के संकुचित अर्थ में जल, ताप, वायु, पेड़, पौधे आदि आते हैं, किन्तु विस्तृत अर्थों में इसके अतिरिक्त हमारे आचार–विचार एवं कर्म–व्यवहार भी समाहित हैं।

पर्यावरण प्रदूषण :- पर्यावरण प्रदूषण वह स्थिति होती है। जब पर्यावरण के विभिन्न घटकों में विद्यमान विषाणु, धूल, धुआं, ध्वनि, जल, वायु या अन्य अपशिष्ट सामग्री के बढ़ते स्तर से उनका संचयन होता है, जो पर्यावरण को अनुकरण करने वाले जीवों, पौधों, पानी, वायु और मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। प्रदूषण विभिन्न स्रोतों से हो सकता है। जैसे कि औद्योगिक इमारतों, वाहनों, कारखानों, विभिन्न उपयोगों के लिए उपयोग किए जाने वाले इंधनों की जलन, केमिकल उद्योग, कृषि, विभिन्न उपयोगों के लिए उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट, और

ISSN No. 2581-3528

अन्य विकारक क्रियाओं से। पर्यावरण प्रदूषण के उदाहरण हैं– वायु प्रदूषण (जैसे कि वाहनों द्वारा उत्पन्न गाड़ियों के धुआं), जल प्रदूषण (जैसे कि नदियों और झीलों में थूथन और अन्य कचरे के उत्सर्जन), मृदा प्रदूषण (जैसे कि केमिकल उद्योगों के बचे हुए संदाय और विषाणु खाद के उपयोग), जैविक प्रदूषण (जैसे कि विषाणु और कृषि उपयोग के लिए कीटनाशकों का उपयोग) आदि। पर्यावरण प्रदूषण के कारण प्राकृतिक संतुलन को प्रभावित किया जाता है, जो प्राकृतिक प्रक्रियाओं, जैव विविधता, और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए, सामुदायिक स्तर पर जागरूकता फैलाना, नवाचारों की प्रयोगशीलता, सशक्त विधानिक उपायों का अनुमोदन और जीवनशैली में पर्यावरण संरक्षण को शामिल करना महत्वपूर्ण है।

प्रदूषण का अर्थ :- सन्तुलित वातावरण में ही जीवन का विकास सम्भव है। पर्यावरण का निर्माण प्रकृति के द्वारा किया गया है। प्रकृति के द्वारा प्रदान किया गया पर्यावरण जीवधारियों के अनुकूल होता है जब वातावरण में कुछ हनिकारक घटक आ जात हैं तो वे वातावरण का सन्तुलन बिगाड़कर उसको दूषित कर देते हैं। यह गन्दा वातावरण जीवधारियों के लिए अनेक प्रकार से हनिकारक होता है। इस प्रकार वातावरण के दूषित हो जाने को ही प्रदूषण कहते हैं। जनसंख्या की असाधारण वृद्धि और औद्योगिक प्रगति ने प्रदूषण की समस्या को जन्म दिया है और आज इसने इतना विकराल रूप धारण कर लिया है कि उससे मानवता के विनाश का संकट उत्पन्न हो गया है।

प्रदूषण के प्रकार :-

(1) वायु प्रदूषण :- वायु जीवन का अनिवार्य स्त्रोत है। प्रत्येक प्राणी को स्वस्थ रूप से जीने के लिए शुद्ध वायु अर्थात् ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। जिस कारण वायुमण्डल में इसकी विशेष अनुपात में उपस्थिति आवश्यक है। जीवधारी साँस द्वारा ऑक्सीजन ग्रहण करता है। और कार्बन डाई–ऑक्साइड

ग्रहण कर हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। इससे वायुमण्डल में शुद्धता बनी रहती है। आजकल वायुमण्डल में ऑक्सीजन गैस का सन्तुलन बिगड़ गया है। और वायु अनेक हानिकारक गैसों से प्रदूषित हो गयी है।

(2) जल प्रदूषण :- जल को जीवन कहा जाता है। और यह भी माना जाता है। कि जल में ही सभी देवता निवास करते हैं। इसके बिना जीव–जन्तु और पेड़–पौधों का भी अस्तित्व नहीं है। फिर भी बड़े–बड़े नगरों के गन्दे नाले और सीवर नदियों के जल में आकर मिला दिये जाते हैं। कारखानों का सारा मैला बहकर नदियों के जल में आकर मिलता है। इससे जल प्रदूषित हो गया है। और उससे भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। जिससे लोगों का जीवन ही खतरे में पड़ गया है।

(3) ध्वनि प्रदूषण :- ध्वनि प्रदूषण भी आज की नयी समस्या है। इसे वैज्ञानिक प्रगति ने पैदा किया है। मोटर, कार, ट्रैक्टर, जेट विमान, कारखानों के सायरन, मशीनें तथा लाउडस्पीकर ध्वनि के सन्तुलन को बिगाड़कर ध्वनि–प्रदूषण उत्पन्न करते हैं। अत्यधिक ध्वनि–प्रदूषण से मानसिक विकृति, तीव्र क्रोध, अनिद्रा एवं चिड़चिड़ापन जैसी मानसिक समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं।

(4) रेडियोधर्मी प्रदूषण :- आज के युग में वैज्ञानिक परीक्षणों का जोर है। परमाणु परीक्षण निरन्तर होते ही रहते हैं। इसके विस्फोट से रेडियोधर्मी पदार्थ सम्पूर्ण वायुमण्डल फैल जाते हैं और अनेक प्रकार से जीवन को क्षति पहुँचाते हैं।

(5) रासायनिक /मृदा प्रदूषण :- कारखानों से बहते हुए अपशिष्ट द्रव्यों के अलावा रोगनाशक तथा कीटनाशक दवाइयों से और रासायनिक खादों से मिट्टी भी प्रदूषित हो गई है इस से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ये पदार्थ पानी के साथ बहकर जीवन को अनेक प्रकार से हानि पहुँचाते हैं।

पर्यावरणीय समस्याएं :- ज्यादातर पर्यावरणीय समस्याएं पर्यावरण अवनयन व जनसंख्या द्वारा संसाधनों के उपभोग में वृद्धि से जनित है। पर्यावरणीय समस्याएं वातावरण में होने वाले वे सारे परिवर्तन है। जो अवांछनीय हैं, जो स्थानीय, क्षेत्रीय तथा वैश्विक स्तर पर पर्यावरण की धारणीयता के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं, इसमें स्थानीय स्तर पर मृदा प्रदूषण, सुपोषण, जल जनित रोग वन्यजीवों की प्रजातियों का विलुप्त होना प्रमुख है। वहीं क्षेत्रीय स्तर पर बाढ़, सूखा, चक्रवात, अम्ल वर्षा, व तेल रिसाव के कारण पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। वैश्विक स्तर पर प्रदूषण जैव– विविधता संरक्षण, भूमंडलीय तापन, ओजोन छरण, जलवायु परिवर्तन तथा प्रजातियों का विनाश होना

प्रमुख पर्यावरणीय समस्या के रूप में विश्व के सम्मुख बड़ा खतरा है। अपनी भावी पीढ़ी को पीने के लिए स्वच्छ जल और जीने के लिए स्वच्छ वायु मुहैया कराना सबसे बड़ी चुनौती है। बढ़ती हुई जनसंख्या और औद्योगीकरण ने विश्व के सम्मुख प्रदूषण की समस्या पैदा कर दी है। कारखानों के धुएँ से विषैले कचरे के बहाव से तथा जहरीली गैसों के रिसाव से आज मानव–जीवन समस्याग्रस्त हो गया है। इस प्रदूषण से मनुष्य जानलेवा बीमारियों का शिकार हो रहा है। कोई अपंग होता है तो कोई बहरा, किसी की दृष्टि शक्ति नष्ट हो जाती है। तो किसी का जीवन। विविध प्रकार की शारीरिक विकृतियाँ मानसिक कमजोरी, असाध्य कैंसर व ज्वर इन सभी रोगों का मूल कारण विषैला वातावरण ही है। इसका एक उपाय यह हो सकता है कि पौधारोपण एवं बनमहोत्सव को शासकीय स्तर पर नहीं बल्कि तिथि त्योहारों की तरह एक सामाजिक मान्यताओं का हिस्सा बना देना चाहिए। आने वाली पीढ़ी को प्रदूषण मुक्त वायु देने के लिए तथा प्रकृति के संरक्षण के लिए अब यह आवश्यक हो गया है। कि पौधारोपण अभियान को शासन प्रशासन की ओर से जन भागी अभियान बनाना चाहिए।

समस्या का समाधान :- वातावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए वृक्षारोपण सर्वश्रेष्ठ साधन है। दूसरी ओर वृक्षों के अधिक कटाव पर भी रोक लगायी जानी चाहिए। कारखाने और मशीनें लगाने की अनुमति उन्हीं लोगों को दी जानी चाहिए जो औद्योगिक कचरे और मशीनों के धुएँ को बाहर निकालने की समुचित व्यवस्था कर सकें। हमेंप्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण जैसे वन्य जीवों, जलवायु प्रणालियों, नदियों, झीलों और वनस्पतियों के संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए। यह प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखेगा और प्रदूषण के प्रभावों को कम करेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ को चाहिए कि वह परमाणु परीक्षणों को नियन्त्रित करने की दिशा में उचित कदम उठाए। तेज ध्वनि वाले वाहनों पर साइलेंसर आवश्यक रूप से लगाए जाने चाहिए तथा सार्वजनिक रूप से लाउडस्पीकरों आदि के प्रयोग को नियन्त्रित किया जाना चाहिए। जल–प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए औद्योगिक संस्थानों में ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि व्यर्थ पदार्थों एवं जल को उपचारित करके ही बाहर निकाला जाए तथा इनको जल स्त्रोतों में मिलाने से रोका जाना चाहिए। प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार प्रदूषण की समस्या के प्रति जागरूक है। उसने 1974 ई0 में 'जल–प्रदूषण निवारण अधिनियम' लागू किया था। इसके अन्तर्गत एक 'केंद्रीय बोर्ड' तथा प्रदेशों में 'प्रदूषण–नियन्त्रण बोर्ड' गठित किये गए है। इसी प्रकार नये उद्योगों को लाइसेंस देने और वनों की कटाई रोकने की दिशा में कठोर नियम बनाए गए हैं। इस बात के भी प्रयास किये जा रहे हैं कि नये वन–क्षेत्र बनाए जाएँ और जन–सामान्य को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित किया जाए। न्यायालय द्वारा प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को महानगरों से बाहर ले जाने के आदेश दिये गए हैं। यदि जनता भी अपने ढंग से इन कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग दे और यह संकल्प ले कि जीवन में आने वाले प्रत्येक शुभ अवसर पर कम–से–कम एक वृक्ष अवश्य लगाएगी तो निश्चित ही हम प्रदूषण के दुष्परिणामों से बच सकेंगे और आने वाली पीढ़ियों को भी इसकी काली छाया से बचाने में समर्थ हो सकेंगे।

निष्कर्ष :- समस्त ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ग्रह अनोखा और निराला है। जहाँ जीवन मुस्कुरा रहा है। लेकिन मानवीय गतिविधियों के कारण यहां हवा, पानी और मिटटी प्रदूषित हो रही है। जिसके कारण पृथ्वी पर उपस्थित विभिन्न नाजुक संतुलन गड़बड़ा गया है। जलवायु परिवर्तन कि समस्या पर्यावरण और पृथ्वी पर उपस्थित समस्त जीवन के साथ मानव के रहन–सहन एवं सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रो को प्रभावित कर रही है। प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करने कि आम बात हो गयी है। जिससे पर्यावरण प्रदूषण कि स्थिति गंभीर होती जा रही है। आज शुद्ध जल, शुद्ध मिटटी और शुद्ध वायु हमारे लिए अपरिचित हो गए है। पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए पूरी दुनिया को वृक्षारोपण द्वारा पुनः हरा भरा बनाना होगा और जीवाश्म ईंधन के उपयोग में कमी लानी होगी सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, जैसे प्रदूषण मुक्त ऊर्जा स्रोतों का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करना होगा। इन उपायों से निश्चित ही इस धरती को पर्यावरण प्रदूषण के खतरों से बचाने में मदद मिल सकती है। पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने कि दिशा में हमारा प्रयास सफल होने के साथ ही पुरे समाज को जोड़ने वाला हो अर्थात सभी कि भागीदारी के द्वारा पर्यावरण प्रदूषण कि चुनौती से निपटा जा सके जिससे हमारी पृथ्वी सुंदर और जीवनदायी बनी रहे और यहाँ जीवन अपने रंग–बिरंगे रूपों में हमेशा खिल खिलाता रहे।

संदर्भ :-

1. पर्यावरण अध्ययन – डॉ. बी. एल. तेली विश्व भारती पब्लिकेशन।

2. भौतिक भूगोल – डॉ. सुरेश चन्द्र बंसल, डॉ. पंकज कुमार चौहान, (मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ)।

3. पर्यावरण भूगोल – डॉ. सविन्द्र सिंह प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, डॉ. राजीव रंजन।

4. पर्यावरण एवं पारिस्थिकी – दृष्टि पब्लिकेशन, डॉ. मुखर्जी नगर दिल्ली।

5. पर्यावरण – डी. आर. खुल्लर, जे. ए. सी. एस. राव।

6. पर्यावरण दर्शन – डॉ. ओम प्रभात अग्रवाल।

7. आधुनिक जीवन और पर्यावरण – दामोदर शर्मा, हरिश्चंद व्यास।

8. पर्यावरण भूगोल का स्वरूप – सविन्द्र सिंह – प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद ।

9. पर्यावरण और मानव जीवन – डॉ. सुमन गुप्ता, लोकप्रिय विज्ञापन सीरीज।

(लेखक किसान (पी. जी.) कॉलेज सिम्भावली में एसोसिएट प्रोफेसर एवं भूगोल विभाग में विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं)

ISSN No. 2581-3528

भारतीय नारीवाद की संकल्पना

डॉ. शिवा शर्मा

नारीवाद हमेशा से इस बात को लेकर बंटा हुआ रहा है कि यह एक पश्चिमी विचारधारा है या भारतीय विचारधारा है क्योंकि यह एक स्वीकृत तथ्य है कि भारत में हमेशा से ही ज्ञान के पुत्र का उदय होता रहा है उसी तरह से भारतीय संस्कृति की विचारधारा में परिवारों ने भारतीय संस्कृति को बढ़ावा दिया है। सीता और द्रौपदी नारीवादी प्रतीक हैं जिन्होंने रामायण और महाभारत के भारतीय महाकाव्यों में भारतीय मानस को बचाया है, उन्हें श्रेष्ठ नारी भी कहा जाता है, उन्होंने व्यावहारिक रूप से अतीत में भारतीय महिलाओं के मानस को आकार दिया है और आधुनिकता और उन्नत प्रौद्योगिकी के इस युग में भी ऐसा करना जारी रखा है।

भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार पंच कन्याओं को हमेशा याद रखना चाहिए जिनकी विचारधारा महान पापों का नाश करने वाली है। रामायण और महाभारत के भारतीय महाकाव्यों में उन्हें अतीत में भारतीय महिलाओं की बहन के रूप में भी संदर्भित किया गया था। यह भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार आधुनिकता और उन्नत तकनीक की पंच कन्या है, जिनकी विचारधारा नष्ट हो जाती है।

इन पांच पंचकन्याओं में से अहिल्या, द्रोपदी, सीता, तारा और मंदोदरी। सीता और द्रौपदी पहली नारीवादी हैं, अपनी परिस्थितियों और चरित्र में भिन्न होने के कारण वे महिलाओं के अधिकार की मशाल थीं जो आधुनिक युग में और अधिक प्रासंगिक हो गई हैं।

श्रेष्ठ नारी में भगवान श्री राम की पत्नी सीता, पंच पांडवों की पत्नी द्रौपदी, राक्षस राजा रमन की पत्नी अहिल्या, ऋषि गौतम की पत्नी और बाली की पत्नी तारा शामिल हैं। सीता और द्रौपदी नई महिलाओं का अवतार हैं, ये दोनों महिलाएं अपने जीवन में इतनी समानताएं रखती हैं। वे भी अपने-अपने तरीकों से बहुत अलग हैं, फिर भी वे आधुनिक भारतीय महिलाओं को अलग-अलग तरीकों से सीता बताते हुए आकार देना जारी रखते हैं और इस संबंध में पहली नारीवादी के रूप में 2019 में पंडित और महिला अधिकारों के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शान्तिश्री धुलीपूडी के शब्दों को छोड़ देते हैं। मार्क्स और उन्होंने अपना काम किया, लेकिन मैं आपको पहली नारीवादी द्रौपदी और सीता के बारे में बताता हूं, जो महाभारत में अपने पति या सीता से पहली एकल मां के लिए जो कुछ भी पूछा गया था, उसे छोड़ने से ज्यादा नारीवादी हो सकती हैं, अगर सीता को सबसे प्रसिद्ध एकल मां के रूप में देखा जाता है भारतीय इतिहास में पहली बार योद्धा बनने का श्रेय उन महिलाओं को जाता है जिन्होंने अपनी कहानियों को दोहराया है।

सीता और द्रौपदी का चित्रण शक्तिशाली पात्रों के रूप में किया गया है जो याद करने पर मजबूर करता है। जबकि वे कुछ संदेश देने वाले और विनम्र प्रतीत होते थे, कभी-कभी जीवन और समय का गहराई से विश्लेषण करने पर पता चलता है कि वे इन किंवदंतियों के पीछे की सच्ची ताकत थे। सीता रामायण में केंद्रीय महिला पात्र थीं जबकि द्रौपदी महाभारत में उनकी समकक्ष थीं, अब इन दो शक्तिशाली किंवदंतियों के इन दो बहुत शक्तिशाली पात्रों के आसपास इन दोनों महिलाओं को एक-दूसरे से बहुत अलग चित्रित किया गया है।

भारत में महिलाओं की स्थिति में गत कुछ अर्से से बदलाव आया है आधुनिक उदारीकरण अर्थव्यवस्था बदली सामाजिक स्थितियों ने निश्चित रूप से महिलाओं को सशक्त होने का शानदार अवसर मुहैया कराया है महिला समाज और देश की उन्नति में विशेष योगदान देने में सक्षम है वे अब केवल ग्रहणी या घरेलू कामों के दायरे में सीमित नहीं है बल्कि व्यापार उद्योग जगत राजनीति व समाज में अपनी मुखर उपस्थिति दर्ज करा रही हैं समाज के ताने-बाने में उनकी स्थिति अबला से सबला के रूप में रूपांतरित हो रही है और वे अब निर्णय में बराबर की भागीदारी निभा रही है आज घरेलू महिला अपने श्रम द्वारा परिवार जनों को सुख देती हैं और उनकी उन्नति में योगदान करती हैं वही कामकाजी महिला आर्थिक सहयोग देकर पारिवारिक उन्नति में अपना योगदान देती हैं

इसी बीच चन्द्रयान-03 मिशन का नेतृत्व कर रही रितु कारीधाल श्रीवास्तव की भी खूब चर्चा हो रही है रितु को बचपन से ही स्पेस साइंस में दिलचस्पी थी वह स्कूल लाइफ में नासा और इसरो के अभियानों से जुड़ी खबरें जुटाया करती थी यह उनके सबसे पसंदीदा कामों में से एक था लखनऊ यूनिवर्सिटी से 1996 में फिजिक्स में एमएससी करने वाली रितु कारीधाल इससे पहले भी इसरो के कई अभियानों में हिस्सा ले चुकी है और डायरेक्टर के तौर पर भी भूमिका अदा की है खास बात यह है कि रितु की पूरी पढ़ाई भारत में हुई थी लखनऊ से एमएससी करने के बाद उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस सिटी लखनऊ यूनिवर्सिटी में उनके टीचर और मेन्टर लोग बताते हैं कि वह बहुत प्रतिभाशाली रही।

स्पेस साइंटिस्ट होने के अलावा वह रिसर्च पेपर भी लिख चुकी है राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रकाशनों में रितु करीधाल के बीस से ज्यादा रिसर्च पेपर पब्लिश हो चुके हैं। रितु मंगलयान मिशन की सह निदेशक एवं परियोजनाओं में उनके अनुभव को देखते हुए उनको चंद्रयान जैसे मिशन की जिम्मेदारी दी गई चन्दयान-02 का नेतृत्व भी रितु ने किया था।

संदर्भ सूची :-

भास्कर, शुक्ला महिलाओं पर महिला - एक नारीवादी अध्ययन। स्वरूप एंड संस 2006

भावलकर, बनमाला, महाभारत में प्रख्यात महिलाएं। नई दिल्ली 7 शारदा प्रकाशन 2002

चक्रवर्ती, उमा सीता मिथक का विकास- मिथक और साहित्य में महिलाओं का एक केस अध्ययन।

सदरलैंड सैली जे.'सीता और द्रौपदी का आक्रामक व्यवहार और संस्कृत महाकाव्यों में महिला रोल मॉडल। जर्नल ऑफ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी वॉल्यूम। 109. नहीं 1 (जनवरी-मार्च)

(लेखिका झम्मन लाल पी.जी. कालेज हसनपुर में (अंग्रेजी विभाग) में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं)

ISSN No. 2581-3528

शिक्षा के मंदिर में भेदभाव की भावना

सोनम लववंशी

शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का आधार स्तंभ है। शिक्षण संस्थान राष्ट्र निर्माण की मजबूत कड़ी है, लेकिन जब शिक्षा के मंदिर से ही जातिगत भेदभाव की नींव पड़ने लगे, तो समझा जा सकता है कि हमारी शिक्षण पद्धति और हम किस दिशा में आगे बढ़ चले हैं। हमारे देश के संविधान की प्रस्तावना 'हम भारत के लोग' से शुरु होती है। संविधान में धर्मनिरपेक्ष, पंथनिरपेक्ष, समाजवादी और लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने की वकालत की जाती है। जिसका सीधा सा अर्थ है कि लोकतंत्र का मूल्य संविधान में निहित है और संविधान छुआछूत और जातिगत भेदभाव का निषेध करता है। पर विडंबना देखिए आजादी के अमृत काल में भी देश छुआछूत के भंवरजाल में फंसा हुआ है। जातिवाद की जड़ें हमारे राष्ट्र को कमजोर कर रही हैं। देश के उच्च शिक्षा संस्थान भी जातीय भेदभाव से पीड़ित हैं।

यही वजह है कि देश की न्यायपालिका को अब इस मुद्दे पर अपनी चिंता व्यक्त करनी पड़ रही है। बीते दिनों विश्वविद्यालयों में बढ़ती भेदभाव की घटनाओं पर टिप्पणी करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि, 'विश्वविद्यालय परिसरों एवम शिक्षा संस्थानों में अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्रों के साथ भेदभाव बंद करने की दिशा में कदम उठाने की आवश्यकता है।' गौरतलब है कि यह टिप्पणी सुप्रीम कोर्ट ने इंदिरा जयसिंह द्वारा दायर एक याचिका की सुनवाई के दौरान की। साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ऐसे दुर्भाग्यपूर्ण रवैये पर अंकुश लगाने बाबत प्रस्ताव पारित करे। दरअसल याचिकाकर्ता के अनुसार, 2004 से लेकर अब तक उपेक्षित वर्ग के 20 से अधिक शोधार्थी एवम छात्रों ने आत्महत्या की है और यही वजह है कि अब विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थान की गरिमा रसातल में जा रही है।

संविधान के अनुच्छेद–14 और 15 में समता, समानता व व्यक्तित्व सम्बंधी स्वतंत्रता की बात कही गई है। इतना ही नहीं अनुच्छेद–21 सभी नागरिकों को सम्मानपूर्वक जीवन जीने की स्वतंत्रता प्रदान करता है, लेकिन जब शिक्षण संस्थानों में ही समता, समानता और अधिकारों की अवहेलना होनी शुरू हो

जाए। फिर सभ्य समाज और उसके नैतिक मूल्यों पर सवाल उठना स्वाभाविक है। शिक्षा, मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए, लेकिन शिक्षण संस्थानों में जातिगत भेदभाव मूल्यों, नैतिकता और संस्कारों को धूमिल कर रहे हैं।

उच्च शिक्षा ही व्यक्ति में आत्मसम्मान और जागरूकता का निर्माण करती है। यही वजह है कि दलित, आदिवासी और पिछड़ी जातियों के बच्चे बड़े सपने लेकर आईआईटी, आईआईएम, आईआईएमसी और एम्स जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ाई करने का सपना सँजोते हैं। उन्हें लगता है कि शिक्षित हो कर वे जातिगत भेदभाव की खाई को कम कर देंगे। ये संस्थाएं उन्हें समाज में बराबरी का दर्जा दिलाएगी, लेकिन अनुभव इसके विपरीत दिखते हैं। कई बार तो छात्र अपनी पढ़ाई तक पूरी नहीं कर पाते हैं और उन्हें आत्महत्या जैसे कदम तक उठाने को मजबूर कर दिया जाता है।

2008 में हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी में छह दलित छात्रों ने आत्महत्या की। स्कूल ऑफ फिजिक्स के एक दलित पीएचडी छात्र पी. सेंथिल ने 2008 में जहर खाकर जान दे दी। 2013 में मदारी वेंकटेश नामक छात्र ने आत्महत्या की, क्योंकि उन्हें विश्वविद्यालय में शामिल होने के ढाई साल बाद भी उनके शोध की निगरानी के लिए कोई पर्यवेक्षक उपलब्ध नहीं कराया गया था। 2016 में पीएचडी स्कॉलर रोहित वेमुला और 2019 में डॉ. पायल तड़वी ने आत्महत्या की। साल 2007 में, नई दिल्ली में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में एससीध्एसटी छात्रों के उत्पीड़न के आरोपों की जांच के लिए एक कमेटी गठित की गई थी। केंद्र सरकार द्वारा गठित इस समिति ने इन छात्रों के खिलाफ बड़े पैमाने पर भेदभाव पाया।

यूजीसी के पूर्व अध्यक्ष सुखदेव थोराट की अध्यक्षता वाली समिति ने एम्स में एससी/एसटी छात्रों का सर्वेक्षण किया और पाया कि शिक्षक भी इस भेदभाव में भागीदार हैं। देश भले आजादी के 75 वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है, लेकिन संकीर्ण और सामंतवादी सोच विश्वविद्यालय परिसरों में भी घर कर चुकी है। वर्ष 2012 में यूजीसी इक्विटी नियम लागू किया गया था। जिसका उद्देश्य जाति उत्पीड़न को रोकना था, लेकिन यह प्रयास भी भेदभाव रोकने में नाकाफी साबित हुआ। ऐसे में अब सामूहिक चेतना में बदलाव से ही शैक्षणिक संस्थान भेदभाव से मुक्त हो पाएंगे। वरना मंगल, चांद कहीं भी मानव पहुँच जाए, लेकिन संविधान, नैतिकता और मानवीय मूल्य धरे के धरे ही रह जाएंगे।

(लेखिका स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी हैं)

ISSN No. 2581-3528

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का वैज्ञानिक आधार

डॉ. नीलम कुमारी

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की सबसे पुरातन व समृद्ध शाली सभ्यताओं में से एक है। भारत प्राचीनकाल से ही ऋषियों और मुनियों के देश के साथ-साथ विद्वानों व वैज्ञानिकों का देश रहा है। भारतीय सभ्यता का अपना 5000 वर्ष का गौरवशाली व स्वर्णिम इतिहास रहा है। भारतीय सभ्यता के इसी गौरवशाली वैज्ञानिक आधार को जवाहरलाल लाल नेहरूविश्वविद्यालय के शोधार्थी सबरीश द्वारा लिखित पुस्तक 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ साइंस इन इंडिया' में प्रदर्शित किया गया है। यह पुस्तक न केवल पश्चिम वैज्ञानिकों के बारे में सम्पूर्ण विश्व के भ्रम को तोड़ती है बल्कि यह पुस्तक इस तथ्य को भी प्रमाणित करती है कि विज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा की ही देन है। सिंधु घाटी सभ्यता इस बात का प्रमाण है कि रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान, गणित, धातु, भौतिकी, इंजीनियरिंग विज्ञान, आयुर्वेद चिकित्सा, कृषि, पशु विज्ञान, भौतिकी, जहाज निर्माण व तकनीकी विश्व को भारत की अमूल्य देंन है व भारत की सांस्कृतिक विरासत है।

विश्व में भारतीय संस्कृति को बहुत अद्भुत माना जाता है। भारतीय संस्कृति ना ही सिर्फ हमें जीने का तरीका सिखाती है बल्कि यह हर एक मनुष्य को आपस में बांध कर भी रखती है।

भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है नमस्कार करना। वैज्ञानिक तर्क के अनुसार नमस्ते करने से हमारा मन प्रसन्न रहता है और हमारा मस्तिष्क शांत रहता है। बहुत से लोग यह मानते है कि नमस्ते करना हमारी परंपरा है लेकिन वह नमस्ते करने के पीछे वैज्ञानिक महत्व को नही जानते कि .....

1. नमस्कार करने से संबंध मजबूत होते हैं - भारतीय परंपरा के अनुसार नमस्कार करते समय हम सामने वाले के लिए सम्मान प्रकट करते हैं। जब वह इंसान भी हमें नमस्कार करता है तो हमारे बीच में एक अध्यात्मिक संबंध बनता है। नमस्कार करने से हमारे रिश्ते मजबूत होते हैं। आंखें बंद करके नमस्कार करने से हम अपनी अंतरात्मा पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और जो हमारे अंदर हैं हम उसे देख सकते हैं।

2. नमस्कार की मुद्रा एक्यूप्रेशर की तरह काम करती है - विज्ञान के अनुसार नमस्कार करने से हमारे प्रेशर पॉइंट्स एक्टिवेट हो जाते हैं। हाथ जोड़ने से दिमाग, कान और आंखों के प्रेशर पॉइंट्स एक्टिवेट हो जाते हैं जिसकी वजह से हम किसी इंसान को लंबे समय तक याद रख सकते हैं।

३ अहंकार को दूर रखता है - नमस्कार शब्द नमः से बना है जिसका मतलब की हम सामने वाले को हर एक क्षेत्र में अपने से उत्तम मान रहे हैं और उसकी लिए अपना आभार प्रकट कर रहे हैं। ऐसा करने से हमारे और सामने वाले के बीच में स्नेह बना रहता है और अहंकार दूर होता है।

४ नकारात्मक उर्जा से दूर रखने में सहायक - हाथ मिलाने की वजह से सामने वाले इंसान के अंदर मौजूद नकारात्मक उर्जा हमारे अंदर भी आ जाती है। लेकिन नमस्ते करते समय सामने वाले इंसान की नकारात्मक ऊर्जा उस तक ही रह जाती है। नमस्ते करते समय हम किसी इंसान से फिजिकल कॉन्टेक्ट में नहीं आते हैं जिसकी वजह से सामने वाले इंसान के अंदर मौजूद कीटाणु और वायरस हमारे अंदर ट्रांसफर नहीं हो पाते हैं।

५ सकारात्मक उर्जा का आदान प्रदान होता है- नमस्कार करने से हमारे शरीर के अंदर मौजूद वैक्यूम ब्रह्मांड में मौजूद वैक्यूम से जुड़ती है जिसके वजह से शरीर में सकारात्मक उर्जा का प्रवाह होता है। जब दो इंसान आपस में नमस्कार की मुद्रा में मौजूद रहते हैं तब दोनों के बीच में सकारात्मक ऊर्जा का आदान-प्रदान होता है।

भारतीय संस्कृति का और अभिन्न अंग रहा है भारत की गुरुकुल परंपरा। भारत के प्राचीन गुरुकुल ज्ञान-विज्ञान की व्यवस्थित शिक्षा के केंद्र थे, भारत में गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था बहुत विज्ञान सम्मत और सुव्यवस्थित थी। गुरुकुलों में ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के साथ ही अनेक तरह के विज्ञान सिखाये जाते थे। तात्कालिक परिस्थितियों

ISSN No. 2581-3528

के अनुसार शिक्षा दीक्षा के साथ राजकाज चलाने से लेकर युद्ध कौशल भी गुरुकुल की शिक्षा का अंग था, जिसका उद्देश्य विद्यार्थी के व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास था। "The advantages of the Ancient Gurukul system" वेद पुराण के अलावा आज भी भारतीय साहित्य में अनेक तरह की पुस्तकें उपलब्ध हैं, जो भारतीय गुरुकुल पद्धति में प्रदान की जाने वाली अलग-अलग तरह की विद्याओं का परिचय देती हैं। इन किताबों और विद्याओं की जानकारी रखने वाले महर्षि को हम तब के वैज्ञानिक कह सकते हैं। "The Scientific base of the Gurukul system and Indian education needs it" भारतीय विद्या अलग-अलग तरह से पूरे विश्व में पहुंची हैं। विदेशी आक्रांताओं ने समय-समय पर भारतीय साहित्य को अपने-अपने देशों में ले जाकर उनका अपनी भाषाओं में अनुवाद करके उस पर शोध भी किया है। अश्विनी कुमार को देवताओं का चिकित्सक कहा जाता है। उड़ने वाले रथ और नौकाओं के आविष्कार का श्रेय अश्विनी कुमार को ही प्राप्त है। इसी तरह धन्वंतरी को प्राचीन चिकित्सा शास्त्र का प्रणेता माना जाता है, चिकित्सा विज्ञान को सुश्रुत, चरक और नागार्जुन ने आगे बढ़ाया। महर्षि भारद्वाज ने वायुयान को लेकर अपने विमान शास्त्र में अनेक रहस्य उजागर किए। महर्षि विश्वामित्र ने अस्त्र विज्ञान के क्षेत्र में ऐसे रहस्यों का उद्घाटन किया जो आज की मिसाइल का तात्कालिक रूप था। महर्षि अगस्त्य को तो बहुत चमत्कारिक अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञान था और उन्होंने लंका विजय के लिए श्रीराम को अनेक तरह के अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये थे। ऋषि विश्वामित्र द्वारा शरीर सहित त्रिशंकु को स-शरीर स्वर्ग भेजे जाने का वर्णन मिलता है। उन्होंने भगवान् श्रीराम को बला और अतिबला नाम की विद्याएँ सिखाई थीं और अनेक दिव्य शस्त्र भी प्रदान किये थे। इसी तरह गर्ग मुनि द्वारा सितारों के संबंध में जानकारियां बताई गई हैं। इन्हें नक्षत्र विज्ञान का जनक कहा जाता है। महाभारत काल में ग्रह नक्षत्रों की स्थिति और काल गणना का जिक्र मिलता है। महर्षि पतंजलि अष्टांग योग के प्रणेता हैं। अष्टांग योग शारीरिक, मानसिक और

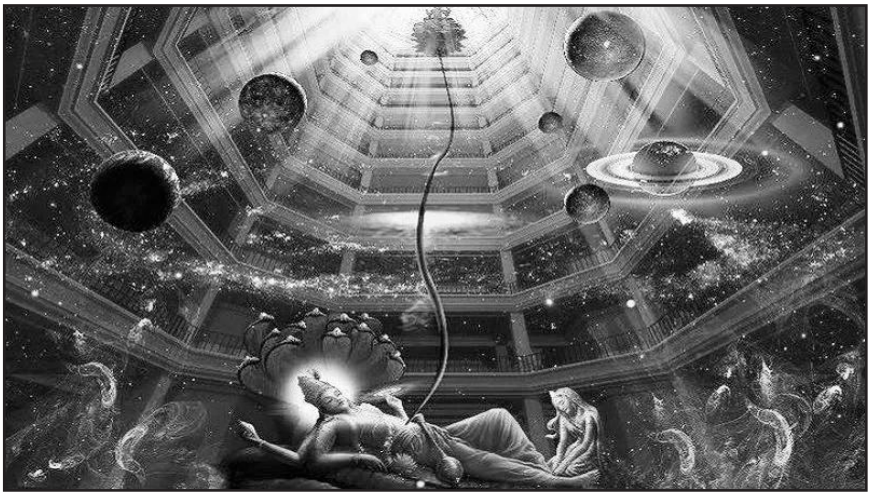

आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ जीवन का विज्ञान है। कपिल मुनि ने चेतना की शक्ति एवं त्रिगुणात्मक प्रकृति के विषय में महत्वपूर्ण सूत्र दिए थे! वह सांख्य दर्शन के प्रणेता थे। महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन, अणु विज्ञान पर बेहद महत्वपूर्ण जानकारी दीद्य महर्षि सुश्रुत ने 'सुश्रुत संहिता' नामक ग्रंथ में शल्य क्रिया का वर्णन किया है! पार्क डेविस ने सुश्रुत को विश्व का पहला सर्जन कहा है! जीवक - सम्राट बिंबिसार ने गौतम बुद्ध की चिकित्सा की, महर्षि बौधायन- प्राचीन गणितज्ञ हैं। महर्षि भास्कराचार्यः गुरुत्वाकर्षण का रहस्य उजागर किया। भास्कराचार्यजी ने अपने 'सिद्धांतशिरोमणि' ग्रंथ में लिखा है, कि पृथ्वी आकाशीय पदार्थों को विशिष्ट शक्ति से अपनी ओर खींचती है! इस वजह से आसमानी पदार्थ पृथ्वी पर गिरता है'! महर्षि चरकः चरक की चरक संहिता चिकित्सा पर एक उल्लेखनीय पुस्तकें हैं! ब्रह्मगुप्तरूगणित में शून्य पर नकारात्मक संख्याएं और संचालन शुरू किया! ब्रह्म मुक्त सिध्दांतिका को लिखा। महर्षि अग्निवेश शरीर विज्ञान के रचयिता थे! महर्षि शालिहोत्र ने पशु चिकित्सा पर आयुर्वेद ग्रंथ की रचना की! व्याडिः एक रसायनशास्त्री थे! इन्होंने औषधि 'भैषज' रसायन का प्रणयन किया! अलबरूनी के मुताबिक, व्याडि ने एक ऐसा लेप बनाया था, जिसे शरीर पर मलकर वायु में उड़ाया जा सकता था! ये सम्राट विक्रमादित्य के महारत्नों में शामिल थे। आर्यभट्टमहान खगोलशास्त्र और व गणितज्ञ थे। इन्होने ही सबसे पहले सूर्य और चन्द्र ग्रहण की व्याख्या की थी ! सबसे पहले इन्होने ही बताया था कि धरती अपनी ही धुरी पर धूमती है! और इसे सिद्ध भी किया था ! यही नहीं, इन्होने ही सबसे पहले पाई के मान को निरुपित किया था! महर्षि वराहमिहिर महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे ! इन्होने पंचसिद्धान्तका नाम की पुस्तक लिखी थी, जिसमे इन्होने बताया कि अयनांश, का मान 50—52 सेकेण्ड के बराबर होता है! और इन्होने शून्य और ऋणात्मक संख्याओं के बीजगणितीय गुणों को परिभाषित किया! हलायुध ज्योतिषविद, गणितज्ञ व महान वैज्ञानिक भी थे! इन्होने अभिधानरत्नमाला या मृतसंजीवनी नामक ग्रन्थ की रचना की! पुरातन ग्रंथों के अनुसार, प्राचीन ऋषि-मुनि एवं दार्शनिक हमारे आदि वैज्ञानिक थे, जिन्होंने अनेक आविष्कार किए और विज्ञान को भी ऊंचाइयों पर पहुंचाया! पाँच हजार वर्ष पहले ब्राह्मणों ने हमारा बहुत शोषण किया। ब्राह्मणों ने हमें पढ़ने से रोका। यह बात बताने वाले कथित इतिहासकार यह नहीं बताते कि 500 वर्ष पहले मुगलों ने हमारे साथ क्या किया? 100 वर्ष पहले अंग्रेजो और वामपंथियों ने हमारे साथ क्या किया? हमारे देश में विज्ञान सम्मत शिक्षा नहीं थी, लेकिन 1897 में शिवकर बापूजी तलपडे ने हवाई जहाज बनाकर उड़ाया था, मुंबई में इसे देखने के लिए उस समय के हाईकोर्ट के जज महागोविंद रानाडे और मुंबई के एक राजा महाराज गायकवाड के साथ-साथ हजारों नागरिक उपस्थित थे। कहा जाता है कि उसके बाद एक डेली ब्रदर नाम की ब्रिटेन की कंपनी ने शिवकर बापूजी तलपडे के

ISSN No. 2581-3528

साथ MOU किया, और बाद में बापू जी का निधन हो गया ! उनकी डेथ के बारे में संदेह व्यक्त किया जाता है। आगे चलकर में राइट बंधु ने हवाई जहाज बनाया! महर्षि भारद्वाज का विमान शास्त्र के आधार पर ही शिवकर बापूजी तलपडे ने जहाज बनाया था। गुरुकुलों में अग्नि विज्ञान, वायु विज्ञान,अंतरिक्ष विज्ञान, पृथ्वी विज्ञान, सूर्य विज्ञान, चन्द्रलोक विज्ञान, मेघ विज्ञान, पदार्थ विद्युत विज्ञान, सौर ऊर्जा विज्ञान, दिन रात्रि विज्ञान, सृष्टि विज्ञान, खगोल विज्ञान, भूगोल विज्ञान, काल विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, रत्न व धातु विज्ञान गुरुत्वाकर्षण विज्ञान, प्रकाश विज्ञान, तार संचार विज्ञान, विमान विज्ञान, जलयान विज्ञान, अग्नेय अस्त्र विज्ञान,जीव, जंतु विज्ञान विज्ञान,यज्ञ विज्ञान, अर्थ विज्ञान, भेषज विज्ञान शल्यकर्म व चिकित्सा विज्ञान, कृषि व जल संचार विज्ञान, पशुपालन विज्ञान, विज्ञान, पशु प्रशिक्षण विज्ञान, यान यन्त्रकार विज्ञान सहित अनेक तरह के विज्ञान की शिक्षा और प्रत्यक्ष प्रशिक्षण की व्यवस्था थी।

जीवन के साथ संस्कारों का घनिष्ठ सम्बन्ध है और भारतीय जीवन में संस्कारों का बड़ा महत्त्व है। संस्कार शब्द की उत्पति 'कृ' धातु में सम उपसर्ग लगाकर की गयी है। इसका अर्थ है-शुद्धि, परिष्कार, सुधार। मन, रुचि, आचार-विचार को परिष्कृत तथा उन्नत करने का कार्य। वास्तव में संस्कृति शब्द संस्कार से बना है। इसका अर्थ है-परिमार्जित, परिकृत, सुधारा हुआ, ठीक किया हुआ। इन अर्थो में मानव में जो दोष हैं, उनका शोधन करने के लिए, उन्हें सुसंस्कृत करने के लिए ही संस्कारों का प्रावधान किया हुआ है ! संस्कारों के द्वारा मानवीय मन को एक विशिष्ट वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर निर्मल, सन्तुलित एवं सुसंस्कृत बनाया जाता है ।

हम सभी भारतवासी यह भलीभांति जानते हैं की हिंदू धर्म विश्व का सबसे प्राचीनतम धर्म है, अभी हम उसे सनातन धर्म भी कहते हैं हिन्दू धर्म की एक विशिष्ट पहचान है इसके संस्कार। यह संस्कार धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक दृष्टि से भी हमारे जीवन में विशेष महत्व रखते है।

महर्षि वेदव्यास के अनुसार मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक पवित्र सोलह संस्कार संपन्न किए जाते हैं, जो कि हमारे शास्त्रों में लिखे गए हैं और आज वैज्ञानिक भी उसे मानते हैं हमारे शास्त्र विज्ञान के ऊपर ही लिखे गए थे और पूर्ण रूप से वैज्ञानिक हैं इसीलिए कहा जाता है हिंदू धर्म विज्ञान के ऊपर ही चलता है। प्रत्येक मनुष्य जन्म के साथ कुछ गुण और कुछ अवगुण लेकर पैदा होता है। उस पर पूर्व जन्मों के संस्कार भी पड़ते हैं। ऐसी मान्यता हिन्दू धर्म की है। अतः आयु वृद्धि के साथ-साथ उस पर नये सरकार भी पड़ते रहते हैं। अतः पुराने संस्कारों को प्रभावित करके उनमें परिवर्तन, परिवर्द्धन कर अनुकूल संस्कारों का निर्माण करने की प्रक्रिया संस्कार कहलाती है जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति के सोलह (16) संस्कारों में शामिल हैं- गर्भाधान संस्कार, पुंसवन, सीमांतोयंत्रन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन विवाह संस्कार, अंत्येष्टि।

सनातन परंपरा में हवन अथवा यज्ञ एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके बिना अधिकांश मांगलिक कार्य पूर्ण नहीं होते हैं। किसी भी मांगलिक कार्य में शुद्धिकरण और भगवान के आह्वान के लिए हवन या यज्ञ आयोजित किया जाता है। हवन या यज्ञ में प्रज्वलित की जाने वाली अग्नि मनुष्य के जीवन मे विशेष महत्व निभाती है। इसलिए इन्हें देव के रूप में भी पूजा जाता है।

हवन का न केवल आध्यात्मिक महत्त्व है, बल्कि इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि शोधकर्ताओं ने यह पाया है कि हवन के प्रयोग होने वाले घी या गुड के जलने से ऑक्सीजन का निर्माण होता है। वहीं हवन का धुंआ वायुमंडल को शुद्ध बनाता है, जिससे करीब 94 प्रतिशत हानिकारक जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। फ्रांस के टेरे नामक वैज्ञानिक ने भी हवन पर शोध करते हुए यह बताया था कि आम की लकड़ी से फार्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है, जिससे खतरनाक जीवाणु वातावरण से नष्ट हो जाते हैं।

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिकों ने भी हवन पर रिसर्च करते हुए यह पाया कि हवन से निकलने वाले धुएं से वातावरण में मौजूद कई प्रकार के विषाणु नष्ट हो जाते हैं। वहीं सारा धुआं बाहर निकल जाने पर भी 24 घंटे तक जगह वातावरण में शुद्धता बनी रहती है और साफ हवा व्यक्ति को प्राप्त होती है।

वास्तव में अगर देखा जाए तो प्राचीन भारत मे प्रयुक्त की जाने वाली भाषा संस्कृत एक वेज्ञानिक भाषा है। भारत मे मनाए जाने वाले सारे पर्व व त्योहारों का अपना वेज्ञानिक महत्व है। इतना ही नही हमारी दैनिक दिनचर्या में शामिल सूर्य को अर्घ्य देना, तुलसी को पानी देना, पेड़ पौधों की पूजा करना, समस्त मानव मात्र के कल्याण की कामना करना व्रत रखना आदि भारतीय सभ्यता व संस्कृति के आध्यात्मिक होने के साथ साथ वैज्ञानिक होने का प्रमाण भी है।

(लेखिका किसान पी. जी. कॉलेज सिम्भावली (हापुड़) में अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं)

■■

ISSN No. 2581-3528

भारत का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

सोनम

राष्ट्रवादी विचारधारा ने अपनी सैद्धांतिक निष्ठाओं में 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' को महत्त्वपूर्ण माना है। किसी भी जीवंत राष्ट्र के लिए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद बहुत महत्त्वपूर्ण है। अपनी संस्कृति से कटकर कोई राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता है। भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद हमेशा से ही चर्चाओं में रहा है। किसी भी राष्ट्र का अर्थ लोगों के उस समूह से है जो एक समान सांस्कृतिक पहचान रखते हैं जबकि देश का अर्थ एक स्टेट (राज्य) से है जो स्वशासी राजनीतिक पहचान पर लागू होता है। हम अपने देश भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखते हैं क्योंकि भारत वर्ष की अपनी एक अलग सांस्कृतिक पहचान है। किसी भी देश अथवा राष्ट्र की पहचान उसकी सांस्कृतिक परम्पराओं एवं समान भाषा से होती है। इसमें राष्ट्र को एक साझी संस्कृति के रूप में देखा जाता है। किसी भी राष्ट्र की गौरव गाथा और उसकी अस्मिता की पहचान उसके सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से ही जानी जाती है। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी मानते हैं कि भारत के राष्ट्रवाद की अवधारणा एक महान राष्ट्र की अवधारणा है।

हमारे देश की एकता का मुख्य आधार हमारी संस्कृति है। यही कारण है कि हमारे देश के राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की ही संज्ञा दी गई है। जिस प्रकार शरीर बिना आत्मा के निरर्थक है, उसी प्रकार संस्कृति से रहित देश निष्प्राण हो जाता है। भारत देश मूलतः संस्कृति प्रधान देश है। हमारे यहाँ जीवन मूल्यों का महत्त्व हैय हमारे राष्ट्र का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद अजर-अमर है।

हमारे राष्ट्र की मूल अवधारणा का केंद्र-बिंदु ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। हमारी संस्कृति विश्व को जोड़ने का कार्य करती है। भारतीय आत्मा की सृजनात्मक अभिव्यक्ति सबसे पहले दर्शन, धर्म व संस्कृति के क्षेत्रों में हुई।

भारत को 'भारतमाता' कहना ही हमारे 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के संस्कार को दर्शाता है। हमारी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की ही यह देन है कि हम अपने देश में पत्थर, नदियाँ, पहाड़, पेड़-पौधे, पक्षी और संस्कृति के पोषक तत्वों को सदैव पूजते हैं। हमारी उदारता, संवदेनशीलता, मानवता के साथ-साथ सहिष्णुता का मूल कारण हमारी सांस्कृतिक विरासत ही है।

भारत की संस्कृति सनातन है और भारत ने शाश्वत और मानवतावादी संस्कृति का ज्ञान सम्पूर्ण विश्व को दिया है। यह भी शाश्वत सत्य है कि विश्व और मानवता का कल्याण भारत की वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से ही हो सकता है।

एक राष्ट्र का जन्म तभी होता है जब इसकी सीमा में रहने वाले सभी नागरिक सांस्कृतिक विरासत एवं एक दूसरे के साथ भागीदारी में एकता की भावना महसूस कर सकें। भारत जैसे विशाल देश में राष्ट्रवाद की भावना हमेशा जात-पात, पंथ और धर्म के मतभेदों से ऊपर रही है। राष्ट्रवाद की भावना के कारण ही भारतीयों को विश्व के ऐसे सबसे बड़े लोकतंत्र में रहने का गौरव प्राप्त है जो शांति, मानवता भाईचारे और सामूहिक प्रगति के अपने मूल्यों के लिए जाना जाता है।

भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार व

ISSN No. 2581-3528

क्षेत्र प्रारम्भ से ही व्यापक रहा है। राष्ट्रीय स्वाभिमान किसी भी देश को शक्तिशाली बनाने में तभी सहायक होता है, जब उसके विचारों पर अन्य देश ध्यान देने लगते हैं। भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक अनुपम उदहारण यह भी है कि जब भारत ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्रसंघ को दिया तो इस प्रस्ताव को न्यूनतम समय में सर्वाधिक देशों का समर्थन मिला था। भारत ने कभी भी अपने मत पर प्रचार अपनी शक्ति के बल पर नहीं किया। आज अयोध्या में श्री राम मंदिर का निर्माण व भव्य श्री काशी विश्वनाथ धाम सम्पूर्ण विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है, स्वामी विवेकानन्द ने ऐसे ही राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत कर परतंत्र भारत को उसके राष्ट्रीय गौरव का स्मरण कराया था। इसके माध्यम से उन्होंने न केवल समर्थ भारत का स्वप्न देखा था बल्कि वह मानते थे कि विश्वगुरु होने की क्षमता केवल भारत के पास ही है। हमें ऐसी बातों को कभी नहीं भूलना चाहिए।

जब हम अपने राष्ट्र के आगे सांस्कृतिक शब्द का प्रयोग करते हैं, तब हमारा ध्यान, राष्ट्र जनों के उन जीवन-मूल्यों की ओर जाता है जो केवल शाश्वत ही नहीं, अपितु हमारे राष्ट्र जीवन को अहम् से वयम् की ओर ले जाने वाले हैं तथा राष्ट्र जीवन को पूर्ण एवं सार्थक बनाने के साथ-साथ सभी राष्ट्रजनों की अंतश्चेतना को विकसित एवं सुदृढ़ बनाने वाले हैं। ये ही वो सांस्कृतिक मूल्य हैं जिनके प्रति आस्था जनित निष्ठा ही राष्ट्रजनों को राष्ट्रीय बनाती है। इस तरह राष्ट्रीयता का मूल स्वरूप राजनीतिक न होकर विशुद्ध सांस्कृतिक है। हमारी संस्कृति ही आध्यात्मिक, गुणात्मक तथा शाश्वत जीवन-मूल्य है, जिनका अनुसरण करते हुए हम उसे राष्ट्र का रूप प्रदान करते हैं। मातृभूमि के प्रति भक्ति तथा निवासी के प्रति आत्मीयता का भाव सांस्कृतिक मूल्य हैं। यही तीनों मिलकर हमारे भारत को राष्ट्र बनाती हैं। राष्ट्र किन्हीं संप्रदायों तथा जन-समूहों का समुच्चय न होकर, एक जीवमान इकाई है।

भारतीय संस्कृति का अतीत, प्रेरणादायक विचारों तथा आदर्शों से भरपूर इसका इतिहास बहुत पुराना है। भारत के पास वैदिक ज्ञान के रूप में विश्व की सबसे अच्छी संस्कृतियों में से एक होने का सौभाग्य है। यह वास्तविकता के अभिन्न, समग्र और आध्यात्मिक दृष्टिकोण और उस पर आधारित जीवन शैली की विशेषता है। यह सजीव और निर्जीव दोनों तरह के सभी अस्तित्वों की मौलिक एकता पर बल देता है। ऋग्वेद में वर्णित है कि प्रत्येक अस्तित्व आध्यात्मिक स्तर पर है, जीवन और चेतना से गतिमान है। इस ब्रह्मांड में हर चीज का सामान्य स्रोत और पोषण है। वास्तव में, जो कुछ भी अस्तित्व में था, जो कुछ भी अस्तित्व में है और जो कुछ भी अस्तित्व में आएगा, वे सभी एक ही दिव्य सत्ता की अभिव्यक्तियाँ हैं, यजुर्वेद के ईशावास्योपनिषद में कहा गया है कि इस परिवर्तनशील संसार में प्रत्येक तत्व दिव्य है और दिव्य द्वारा व्याप्त है। ऋग्वेद में कहा गया है कि यह एक एकात्मक, स्व-विद्यमान सिद्धांत है जो स्वयं को विविध रूप से प्रकट करता है। इसे विविध रूप से अनुभव और अभिव्यक्त भी किया जाता है। यही हमारी भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रेरणा के स्रोत भी हैं।

भारत एक सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विविधता वाला देश है। यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही है जो यहाँ के निवासियों को उनके विभिन्न सांस्कृतिक-जातीय पृष्ठभूमि से संबंधित होने के बावजूद एकता के सूत्र में एक साथ बांधता है। यह कश्मीर से कन्याकुमारी तक सभी भारतीयों को एकजुट करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(लेखिका डी.पी.एम. इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन बहसूमा, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं)

■■

ISSN No. 2581-3528

स्वतंत्रता संग्राम में पश्चिम उत्तर प्रदेश की वीरांगनाओं की भूमिका

प्रो. सुनील दत्त त्यागी

भारत के इतिहास में कई योद्धा, शूरवीर, क्रांतिकारी हुए जिन्होंने कभी बाहरी आक्रमण से देश की रक्षा की तो कभी राज्य के अंदर ही षड्यंत्रकार्यों का सामना किया! ईस्ट इंडिया कंपनी से लेकर ब्रिटिश सरकार तक को लोहा मनवाया! इन शूर वीरों का नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज है! भारतीय इतिहास में कई महिलाओं के नाम भी शामिल हैं, जो योद्धा महिलाओं के तौर पर अपना नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज करा चुकी हैं! इन योद्धा महिलाओं ने पुरुषों के समान ही राज्य के दुश्मनों से टक्कर ली! कभी महल के अंदर से अपने पतियों व राजाओं का राज तिलक कर युद्ध के लिए भेजा, तो कभी राज्य की रक्षा के लिए तलवार उठा ली! भारत की आजादी पर 76 साल पूरे होने के मौके पर आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है! लेकिन खेद का विषय यह है कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी कुछ महिला योद्धाओं का नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज होना चाहिए था किंतु इन्हें भुला दिया गया है! जिनका बलिदान किसी भी क्रांतिकारी से कम नहीं है! जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी वीरांगनाओं की भांति अपनी अमिट छाप छोड़ी थी! मुल्क की आजादी के लिए इन वीर महिलाओं ने गांव गांव से जुड़ी महिलाओं की टोलियां बनाकर पुरुषों के साथ मिलकर जंगे आजादी का बिगुल फूंका था! वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आजादी के आंदोलन तक पश्चिम उत्तर प्रदेश की क्रांतिकारी वीरांगनाओं का नाम इतिहास के पन्नों में अपनी त्याग, तपस्या, संघर्ष, देशभक्ति और बलिदान के लिए दर्ज है! ऐसी ही 10 महिला योद्धा जिनका इतिहास में दमदार योगदान रहा है, परंतु उन्हें नींव के पत्थर की तरह भुला दिया गया है!

1) भगवती देवी त्यागी अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति की योद्धा जिन्हें हमने भुला दिया है! त्यागी मतलब त्याग और तपस्या के प्रतीक को जिन्होंने सही तरीके से चरितार्थ किया है! इस क्रांति योद्धा का जन्म शामली, उत्तर प्रदेश में 1834 में जमीदार त्यागी ब्राह्मण परिवार में हुआ था! इस वीरांगना ने अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति में अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे! यह वीरांगना एक कुशल तलवारबाज युवती थी! एक दिन अंग्रेजो के द्वारा इन्हें छल से पकड़कर तथा इनके अनेक साथियों के साथ मौत के घाट उतार दिया था! इनके साथियों को फांसी चढ़ा कर तथा इन्हें तोप से बांधकर मौत दे दी गई थी!

2) आशा देवी 28 साल की आशा देवी एक हिंदू गुर्जर परिवार से थी और इन्हें 1858 में फांसी दे दी गई थी!

3) हबीबा मुस्लिम गुर्जर परिवार से ताल्लुक रखने वाली 24 साल की हबीबा ने निडर होकर आसपास के इलाकों को अंग्रेजों से आजाद कराने के लिए कई लड़ाइयां लड़ी थी! वह एक महान संगठन करता थी और इन्होंने अपने पड़ोस की महिलाओ को मुक्ति संग्राम के लिए संगठित किया! ब्रिटिश हमलों का विरोध करते समय इन्हें पकड़ लिया गया और 1858 में फांसी दे दी गई थी!

4) महावीरी देवी मुजफ्फरनगर जिले के मुंडभर गांव की महावीरी देवी एक दलित वीरांगना थी! जिन्होंने 22 महिलाओं का एक समूह बनाया था! इन वीरांगनाओं ने अट्ठारह सौ सत्तावन में अंग्रेजों पर एक साथ हमला किया और कई ब्रिटिश सैनिकों को मार डाला था ! किंतु सभी क्रांतिकारी महिलाओं को धोखे से पकड़ कर मौत के घाट उतार दिया था!

5) रहीमी मुस्लिम राजपूत परिवार से ताल्लुक रखने वाली 28 साल की वीरांगना रहीमी को 1858 में फांसी दे दी गई थी!

6) इंदर कोर बख्तावरी 38 साल की वीरांगना इंदर कौर बख्तावरी जाट परिवार से थी और उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते हुए अपनी जान दे दी थी!

7) उम्दा 26 साल की उम्दा इस क्षेत्र की एक और वीर महिला थी जिनका जन्म एक जाट मुस्लिम परिवार में हुआ था! जिन्होंने ब्रिटिश आक्रमण का विरोध करते हुए अपना जीवन बलिदान कर दिया था!

8) असगरी बेगम 45 साल की असगरी बेगम एक संपन्न परिवार से ताल्लुक रखती थी! इस वीरांगना को 1858 में इलाके में सशस्त्र विद्रोह आयोजित करने के लिए इन्हें जिंदा जला दिया गया था!

9) मान कौर 25 वर्षीय मान कौर इस क्षेत्र की एक बहादुर सिख महिला थी और चरवाहे के परिवार से थी! जिन्हें 1858 में फांसी दे दी गई थी!

10) राज कौर 24 साल की राज कौर एक राजपूत परिवार से थी और उन्होंने थाना भवन में अंग्रेजो के खिलाफ लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया था!

यह सैकड़ों महिला क्रांतिकारियों में से कुछ नाम हैं! जो अंग्रेजों द्वारा क्रूर दमन और बाद में भारतीयों की उपेक्षा के बाद भी हमारे रिकॉर्ड में दर्ज हैं! यह हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम इनके नाम राष्ट्रीय चेतना से न मिटने दें और यूरोप को बताएं कि इससे पहले कि वह एक महिला युद्ध बल की कल्पना कर सकें हमारी महिलाओं ने अपने नेतृत्व में अपने शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ाई लड़कर अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे!

(लेखिक किसान पी.जी. कॉलेज सिम्भावली हापुड़ में कृषि वनस्पति विज्ञान विभाग में कार्यरत हैं)

ISSN No. 2581-3528

क्या है कृत्रिम बुद्धि तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या एआई?

मृत्युंजय दीक्षित

आजकल जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ए. आई. का उपयोग किये जाने की चर्चा हो रही है तो स्वाभाविक रूप से हम सभी के मन में प्रश्न उठता है कि ये ए.आई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या कृत्रिम बुद्धि वास्तव में है क्या और बुद्धि कृत्रिम कैसे हो सकती है?

हिंदी के कृत्रिम शब्द का अर्थ है बनावटी यानि जो मूल नहीं है नकल है, यही अर्थ आंग्ल भाषा के शब्द आर्टिफिशियल का भी है अतः स्पष्ट है कि कृत्रिम रूप से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता ही कृत्रिम बुद्धि अथवा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस है जिसे संक्षेप में ए.आई कहते हैं। ए.आई. के माध्यम से कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिनके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आरम्भ 1950 के दशक में हुआ था इसका जनक जॉन मैकार्थी को माना जाता है उनके अनुसार ए.आई. बुद्धिमान मशीनों, विशेष रूप से बुद्धिमान कंप्यूटर प्रोग्राम बनाने का विज्ञान और अभियांत्रिकी है अर्थात यह मशीनों में विकसित और मशीनों द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली अथवा मशीनों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बुद्धि है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट या फिर मनुष्य की तरह बौद्धिक रूप से सोचने वाला सॉफ्टवेयर बनाने का एक तरीका है जो यह अध्ययन करता है कि मानव मस्तिष्क कैसे सोचता है और समस्या को हल करते समय कैसे सीखता है, कैसे निर्णय लेता है और कैसे काम करता है? आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वाले सिस्टम ने 1997 में शतरंज के सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में से एक गैरी कास्परोव को खेल में हरा दिया था।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर विशेषज्ञ 'टेक्नोलॉजिकल सिंगुलैरिटी' यानी तकनीकी एकलता जैसी स्थिति बनने का संकेत करते हैं। इसका तात्पर्य है भविष्य में ऐसी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की रचना की जाएगी, जो मनुष्यों के मस्तिष्क से अधिक तीक्ष्ण होगी और यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता समस्याओं के समाधान बहुत तीव्रता से कर सकेगी, जो कि मनुष्य की क्षमता से परे है। अनुमान है कि 2045 तक मशीनें स्वयं सीखने और स्वयं को सुधारने में सक्षम हो जाएंगी और इतनी तेज गति से सोचने, समझने और काम करने लगेंगी कि मानव विकास का पथ हमेशा के लिये बदल जाएगा।

ISSN No. 2581-3528

भारत में केंद्र में भाजपा की सरकार आने के बाद ए.आई. के कार्य को गति मिली। वर्ष 2018–19 के बजट भाषण के दौरान तत्कालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली ने यह उल्लेख किया था कि नीति आयोग जल्दी ही राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्यक्रम (एन.ए.आई.पी.) की रूपरेखा तैयार करेगा। राष्ट्रीय स्तर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने के लिये नीति आयोग के उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है। वर्तमान बजट में सरकार ने फिफ्थ जनरेशन टेक्नोलॉजी स्टार्ट अप के लिये 480 मिलियन डॉलर का प्रावधान किया है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग इंटरनेट ऑफ थिंग्स, 3D प्रिंटिंग और ब्लॉक चेन शामिल हैं। इसके अलावा सरकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग, बिग डाटा इंटेलिजेंस, रियल टाइम डाटा और क्वांटम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण, मानव संसाधन और कौशल विकास को बढ़ावा देने के योजना बना रही है। पिछले वर्ष अक्टूबर में केंद्र सरकार ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग करने के लिये 7–सूत्री रणनीति तैयार की थी जो भारत की सामरिक योजना का आधार तैयार करेगी।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भारत में अभी शैशवावस्था में है और देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें इसे लेकर प्रयोग किये जा सकते हैं। देश के विकास में इसकी संभावनाओं को देखते हुए उद्योग जगत ने सरकार को सुझाव दिया है कि वह उन क्षेत्रों की पहचान करे जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग लाभकारी हो सकता है जबकि सरकार ने उद्योग जगत से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल के लिये एक मॉडल बनाने में सहयोग करने की अपील की है।

भारत सरकार सुशासन की दृष्टि से सभी संभव स्तरों पर आर्टिफिशियल

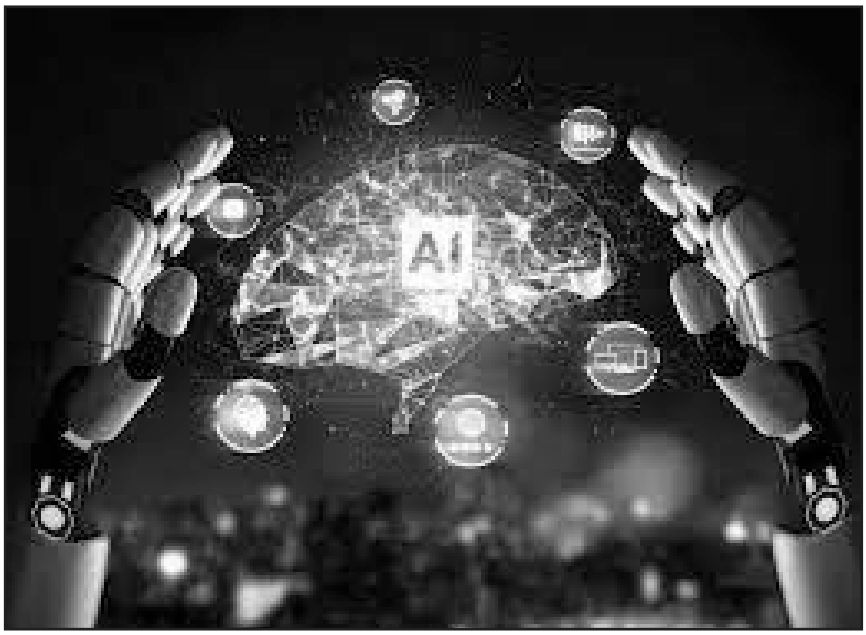

इंटेलिजेंस के प्रयोग के लिए आगे बढ़ रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रमुख अनुप्रयोगों में से एक है ए.आई. परिचय जो विभिन्न प्रकार के पहचान पत्रों के मिलान तथा सत्यापन में सहयोगी है वही एक अन्य अनुप्रयोग ए.आई. वाणी है जो मेघराज क्लाउड के माध्यम से सेवाओं को एक मंच पर लाकर चैटबॉट्स, वॉयस बॉट और ट्रान्सलिटरेशन जैसी सेवाएं प्रदान करता है। एनआईसी ने 20 चैटबॉट जैसे ई–वे बिल, आरटीओ, कंज्यूमर फोरम, आई खेडुत, मेघालय कोविड–19 आदि की सुविधा प्रदान की है। उनमें से कुछ विभिन्न मंत्रालयों,विभागों और राज्यों में विभिन्न योजनाएं के लिए बहुभाषी और 8 द्विभाषी वॉयस सपोर्ट सेवाएं जैसे पीएम–किसान, पीएम–कुसुम, आईवीएफआरटी आदि हैं।

एनआईसी ने कुछ परियोजनाओं के लिए मॉडल की सुविधा प्रदान की है जैसे कि स्वच्छ भारत शहरी में स्वचालित टॉयलेट सीट के लिए स्वच्छता मोबाइल ऐप और जियो टैग्ड टॉयलेट इमेज में लाभार्थी का पता लगाना, इसी तरह के मोटर दुर्घटना दावा याचिका मामले के लिए संज्ञानात्मक खोज आदेश, निचली न्यायपालिका में ई–न्यायालय, पिछले अंकों के आधार पर कला, विज्ञान और वाणिज्य विषयों के लिए सीबीएसई बारहवीं कक्षा की परीक्षा में छूटे हुए छात्रों के लिए अंकों का आँकलन।

ए. आई. की उपयोगिता को देखते हुए, प्रदेश के विकास के लिए प्रतिबद्ध तथा प्रदेश को एक ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य लेकर चल रहे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने इस क्षेत्र के लिए लघु तथा दीर्घकालीन योजना बनाने पर बल देते हुए आगामी पांच वर्षों में प्रदेश की राजधानी लखनऊ को पहला ए. आई. सिटी बनाने को कहा है।

जिस तरह से कृत्रिम बुद्धि वाली मशीनों और उनकी कार्यक्षमता की चर्चा हो रही है उसे सुनकर कई बार यह प्रश्न भी उठता है कि क्या मशीनें भविष्य में मानव कार्यबल का स्थान ले लेंगी? फिर मनुष्य जीवन कैसा हो जायेगा? इस क्षेत्र में कार्य कर रहे वैज्ञानिकों का मत है कि मशीनें कभी भी मानव मस्तिष्क का स्थान नहीं ले पाएंगी।

(लेखक स्तम्भकार हैं)

ISSN No. 2581-3528

नई शिक्षा नीति देश दुनिया को समृद्ध करने की भारतीय पद्धति

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

सही शिक्षा, पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के अनुसार, एक निवेश है जो आने वाले वर्षों में समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

मैकाले द्वारा शुरू की गई त्रुटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य हर भारतीय को ब्रिटिश विचार प्रक्रिया का गुलाम बनाना और भारतीय संस्कृति और धर्म के प्रति तिरस्कार पैदा करना था। यदि वे आज जीवित होते तो नेहरू गांधी परिवार की सराहना करते और अंग्रेजों के हाथों से आजादी के बाद उनकी नीतियों को जारी रखने पर अत्यंत प्रसन्न होते, यह जानते हुए भी कि यह राष्ट्र और व्यक्ति के चारित्रिक विकास के लिए हानिकारक है। गुलामी की मानसिकता और राजनीतिक रूप से स्वार्थी दल अब मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति का विरोध कर रहे हैं क्योंकि मैकाले शिक्षा प्रणाली द्वारा बड़े पैमाने पर आबादी को गुलाम बनाया जाता है और नई शिक्षा नीति जेब भरने और सत्ता का आनंद लेने के अपने स्वार्थी इरादे को कमजोर कर देगा। इस कार्य योजना को कमजोर करने के लिए लोगों के दिमाग में जहर घोलने जैसी संशयवादियों द्वारा खडी की गई बाधाओं के बावजूद, सीबीएसई और कुछ राज्यों को एनईपी 2020 कार्यान्वयन के साथ कदम दर कदम आगे बढ़ते हुए देखना उत्साहजनक है।

किसी भी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य राष्ट्र–प्रथम विचार प्रक्रिया के अनुसार जीवन कौशल और एक मजबूत मानसिकता विकसित करना होना चाहिए, जिसका अर्थ है व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र का विकास करना। यह हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली की नींव थी, जो व्यावहारिक अनुप्रयोगों के माध्यम से वैज्ञानिक और तकनीकी मानसिकता विकसित करने के साथ–साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलुओं के अध्ययन पर बनी थी।

आप मैकाले की सड़ी हुई शिक्षा प्रणाली का उपयोग करके राष्ट्रीय लोकाचार वाले लोगों का एक वर्ग विकसित नहीं कर सकते हैं, नई शिक्षा नीति से जीवन कौशल विकसित कर सकते हैं जो व्यक्तिगत क्षमता को नैतिक रूप से पोषित करने के लिए आवश्यक हैं और एक सफल उद्यमी, राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता या कोई अन्य विशेष कौशल सीख सकते हैं। मौजूदा त्रुटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली वर्षों से धीमी सामाजिक आर्थिक वृद्धि, असामाजिक तत्वों की वृद्धि, भ्रष्टाचार और भ्रष्ट मानसिकता के लिए जिम्मेदार है। यह नई शिक्षा नीतियों को विकसित करने और लागू करने पर ध्यान केंद्रित करने का समय है जो हमारे राष्ट्र को 'विश्वगुरु' में बदलने के लिए गुणात्मक और कुशल दोनों हैं, जिस पर भारत का मूल आधारित है।

'पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यापक शिक्षा दर्शन' – भारतीय लोकाचार के अनुसार 'व्यष्टि' (व्यक्तिगत आध्यात्मिक अभ्यास), 'समष्टि' (सामूहिक आध्यात्मिक अभ्यास), 'सृष्टि' (सृजन), और 'परमेष्ठी' (निर्माता या परमात्मा) की प्राप्ति उनके विचार का सार है। शिक्षा वह साधन है जिसके माध्यम से इन प्रबुद्ध सिद्धांतों को साकार किया जा सकता है। केवल औपचारिक शिक्षा ही बच्चों को एक पूर्ण व्यक्तित्व बनाने में मदद नहीं कर सकती है। परिणामस्वरूप, उन्होंने विद्यार्थियों के लिए औपचारिक स्कूली शिक्षा और अनौपचारिक संस्कार शिक्षा के संयोजन की वकालत की। उपाध्यायजी के शिक्षा दर्शन का मुख्य मूल्य राष्ट्रीयता है।

ISSN No. 2581-3528

उनकी राय में, भारत न केवल देश की भौतिक एकता का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि विविधता में एकता प्रदर्शित करने वाली भारतीय जीवन शैली का भी प्रतिनिधित्व करता है। नतीजतन, भारत न केवल एक राजनीतिक नारा है जिसे हमने परिस्थितियों के कारण गले लगाया, बल्कि यह हमारी पूरी विचारधारा की नींव है।

वैदिक शिक्षा के आदर्शों ने दुनिया भर की सभी शिक्षा प्रणालियों को प्रेरित किया है। क्योंकि अनुशासनहीनता के परिणामस्वरूप शैक्षिक वातावरण इतना जहरीला हो गया है, आधुनिक संस्थानों के लिए विद्यार्थियों से निपटना और नैतिक सिद्धांतों को प्रसारित करना एक बड़ी कठिनाई बन गई है। आधुनिक छात्रों में अनुशासन की भावना की कमी दिखाई देती है। हम अपने ज्ञान और प्रतिभा को बेहतर बनाने के लिए तकनीक का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन हमने इसे केवल क्षणभर आनंद के लिए उपयोग करके इसे विनाशकारी बना दिया है। वैदिक शिक्षा का अंतिम लक्ष्य व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करना था।

जो लोग अंग्रेजी को भारत की राष्ट्रीय चेतना का कारण और साधन मानते हैं, वे हमारे राष्ट्रीयता के सकारात्मक पहलुओं की अनदेखी करते दिखाई देते हैं। मैकाले की भविष्यवाणी सच होती दिख रही है और भारत के अंग्रेजी पढ़े–लिखे निवासी नाम मात्र के भारतीय रह गए हैं क्या यह सवाल दिमाग में घर कर गया है। ये लोग भारत की आत्मा को महसूस करने या लोगों को किसी रचनात्मक उद्देश्य के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करने में असमर्थ हैं। जब तक अंग्रेजी का उपयोग किया जाएगा, नेताओं और नागरिको के बीच एक कभी न मिटने वाली खाई बनी रहेगी। यह या तो लोगों को दमन और अधीनता की भावना के साथ निष्क्रिय बना देगा, या यह उन्हें नेतृत्व के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रेरित करेगा।

'नई शिक्षा नीति अगली पीढ़ी की संभावनाओं को कैसे प्रभावित करेगी?'

कई शोध और गहन विश्लेषणों ने साबित किया है कि किसी व्यक्ति या संगठन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि दिमाग और मन को कितनी अच्छी तरह

संभाला जाता है और कैसे विभिन्न जीवन कौशल सीखे जाते हैं। दुर्भाग्य से, मैकाले की शिक्षा प्रणाली हमारे छात्रों को ऐसी शिक्षा प्रदान नहीं करती है, जिसके परिणामस्वरूप कमजोर मानसिकता बन रही है, हमारी पीढ़ियों में कोई जीवन कौशल विकसित नहीं हुआ है, नवाचार, अनुसंधान और विकास पर कोई स्पष्ट ध्यान नहीं दिया गया है, केवल नौकरी तलाशने की मानसिकता बन चुकी है, और उद्यमिता पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि हर साल नशीली दवाओं के दुरुपयोग, असामाजिक तत्वों, राजनीतिक राष्ट्रविरोधी टूलकिट का हिस्सा, अवसाद, चिंता और आत्महत्या की प्रवृत्ति और आत्महत्या के मामलों में वृद्धि हुई है।

हमारे छात्रों के समग्र विकास को ध्यान में रखने के लिए एक नई शिक्षा नीति विकसित की जा रही है, ताकि एक मजबूत और सकारात्मक मानसिकता के साथ–साथ अनुसंधान और विकास पर ध्यान देने के साथ–साथ आधुनिक शिक्षा के साथ सीखे गए जीवन कौशल नकारात्मक मानसिकता को बदल सकें और एक बेहद सकारात्मक और नौकरी तलाशने वाले के बजाय नौकरी देने वाले के दृष्टिकोण के लिए विचार प्रक्रिया बने। भारत से दूसरे देशों में टेक्नोलॉजी ट्रांसफर शुरू हो गयी है। वर्तमान में, यह उलट हो रहा है। अनुसंधान और विकास दीर्घकालिक विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा जो पर्यावरण के लिए हानिकारक नहीं होगा। उपभोक्तावाद पर मानवता की प्रधानता होगी।

जब दुनिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में प्रवेश कर रही है, तो यह महत्वपूर्ण है कि इसका दुरुपयोग न किया जाए, क्योंकि इससे मानव जाति और मानव मानसिकता को गंभीर नुकसान होगा। नतीजतन, नई शिक्षा नीति का आध्यात्मिक आयाम हमारे छात्रों को नैतिक अभ्यासों से लैस करेगा, जिससे वे उचित दृष्टिकोण, दिशा और प्रौद्योगिकी के संतुलित उपयोग के साथ एआई पर दुनिया के विशेषज्ञों का नेतृत्व कर सकेंगे।

ऑस्ट्रेलियाई शिक्षा मंत्री, जेसन क्लेयर ने टिप्पणी की कि भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) में देश में क्रांति लाने और इसे दुनिया की अग्रणी आर्थिक महाशक्तियों की श्रेणी में लाने की क्षमता है। उन्होंने यह भी कहा कि एनईपी भारतीयों की युवा पीढ़ी को कौशल प्रदान करेगा जो उनके भविष्य के लिए सहायक होगा, साथ ही स्कूल की भागीदारी, पहुंच और सीखने के परिणामों में सामाजिक असमानताओं को मिटा देगा।

हर भारतीय को ऑस्ट्रेलिया के शिक्षा मंत्री के बयान का विश्लेषण करना चाहिए, अगर ऑस्ट्रेलियाई शिक्षा मंत्री एनईपी 2020 के महत्व को समझ सकते हैं, तो हमारे लिए इसका महत्व समझना इतना मुश्किल क्यों है क्योंकि कुछ राजनेता, उनकी पार्टियां और तथाकथित स्वार्थी बुद्धिजीवी वर्ग चाहते हैं कि भारतीय पश्चिमी विचारों के गुलाम बने रहें?

(लेखक ब्लॉगर एवं शिक्षाविद हैं)

ISSN No. 2581-3528

समान नागरिक संहिता आज देश की अवश्यकता है

डॉ. प्रवेश कुमार

हमारे संविधान निर्माताओं ने एक देश एक कानून की वकालत की थी जब देश में क्रिमिनल लॉ, कमर्शियल लॉ सभी एक हैं तो पर्सनल लॉ एक क्यों नहीं है? यह आज देश में बहस का मुद्दा बना है। समान नागरिक संहिता यानि कि कानून की दृष्टि से सभी समान, किसी को कोई विशेष अवसर नहीं। यह आज ही चर्चा का विषय बना है ऐसा नहीं बल्कि वर्षों से यह चर्चा में ही रहा है। कई बार देश के सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि राष्ट्र ने अभी तक अपने नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता लागू करने का प्रयास क्यों नहीं किया है।

सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि संविधान के संस्थापकों ने उम्मीद जताई थी कि एक दिन राज्य समान नागरिक संहिता की अपेक्षाओं को पूरा करेगा और समान नागरिक संहिता प्रत्येक रिलीजन के रीति–रिवाजों जैसे विवाह, तलाक आदि के अलग–अलग व्यक्तिगत कानूनों की जगह लेगा। इसी को लेकर भारत के न्यायालयों ने समय–समय पर विभिन्न मामलों में सुनवाई करते हुए उस समय की सरकारों से यूसीसी लागू करने के लिए एवं अपने संवैधानिक कर्तव्यों के निर्वहन के लिए चेताया भी। इसी प्रकार का एक बहुचर्चित मामला वर्ष 1985 का शाहबानो का मामला था, इस केस की सुनवाई करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता के अनुच्छेद 125 के तहत 67 वर्ष की एक बुजुर्ग मुस्लिम महिला को भटकाब व दरिद्रता की स्थिति से बचाने के लिए उसे उसके पति से लगभग 174 रुपए आर्थिक सहायता के रूप में दिलाने का निर्देश दिया था जो कि भारतीय दंड संहिता के अनुच्छेद 125 के तहत ही था।

इसके अनुसार यदि कोई व्यक्ति अपने ऊपर आश्रित व्यक्ति के भरण–पोषण की जिम्मेदारी से स्वयं को अलग करता है तो उस स्थिति में आश्रित व्यक्ति न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकता है। इस पर न्यायालय उस आश्रित व पीड़ित व्यक्ति को एक निश्चित राशि उसके गुजारे के लिए दिला सकती है। लेकिन कानूनी लड़ाई की हार के बाद शाहबानों के पति ने इस्लामिक कानूनों का हवाला देकर यह दलील दी कि वह ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं है। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड भी शाहबानों के पति के साथ ही खड़ा हुआ और उसने देश में सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले को धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करार देते हुए इसे मुस्लिम समाज की अस्मिता पर खतरा बताया। अंततः दबाव में आकर वर्ष 1986 में शीतकालीन सत्र के आरंभ में ही तत्कालीन राजीव गांधी सरकार ने एक विधेयक लाकर माननीय सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को पलट दिया।

इसी प्रकार 1995 के एक अन्य मामले में भी सर्वोच्च न्यायालय ने समान नागरिक संहिता की जरूरत पर जोर डाला। 1995 के सरला मुद्गल व अन्य बनाम यूनियन ऑफ इंडिया मामले में न्यायमूर्ति कुलदीप सिंह ने भी संविधान के अनुच्छेद 44 का उल्लेख करते हुए कहा की अनुच्छेद 44 कहता है कि सरकार पूरे देश के लिए समान नागरिक संहिता को लागू करें, वहीं अफसोस व्यक्त करते हुए वे आगे कहते हैं कि लगता है 41 वर्षों बाद भी देश की सरकार समान नागरिक संहिता के मुद्दे को ठंडे बस्ते से बाहर निकालने के लिए तैयार नहीं है। जस्टिस कुलदीप सिंह जी आगे कहते हैं कि जब देश की 80 प्रतिशत आबादी के लिए निजी कानूनों को संहिताबद्ध कर दिया गया है तो ऐसे में देश के समस्त नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता को लागू न करने का कोई कारण नहीं है।

वर्ष 2003 में जॉन वल्लमत्तोम केस में भी सर्वोच्च न्यायालय ने दोबारा अनुच्छेद 44 के उद्देश्यों को प्राप्त करने की महत्ता पर प्रकाश डाला। मेघालय का उच्चतम

न्यायालय के न्यायधीश श्री एसआर सेन ने एक मामले की सुनवाई के दौरान अनुच्छेद 44 के लक्ष्यों के उद्देश्यों को प्रकाशित किया। वर्ष 2019 में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश दीपक गुप्ता व अनिरुद्ध बोस ने गोवा से संबंधित एक मामले में सुनवाई करते हुए कहा कि संपत्ति के उत्तराधिकार संबंधी विषयों में गोवा के निवासियों के संबंध में 1867 के पुर्तगाली सिविल कानून के आधार पर ही फैसला लिया जाएगा। जस्टिस दीपक गुप्ता ने कहा कि गोवा अन्य राज्यों के लिए एक उदाहरण है जहां प्रत्येक पंथ को मानने वालों के लिए निजी विषयों से जुड़े कानूनों में एकरूपता है। गोवा में जिन भी मुसलमान युवकों का विवाह पंजीकृत है वह न तो बहु विवाह के लिए अधिकृत हैं न ही तीन तलाक के लिए ही। इतिहास के पन्नों को पलटा जाए तो भारत में विभिन्न जाति वर्ग के भिन्न–भिन्न कानून थे, नियम थे लेकिन धर्म का मौलिक तत्व सब में एक ही था जो सभी में मानवता का बोध कराता था। भारत में इस्लाम के आने के बाद भिन्न पूजा पद्धति एवं भिन्न संहिता का विचार हमें देखने को मिलता है। अब संहिता दो प्रकार की हो जाती है एक हिन्दू दर्शन पर आधारित है वही दूसरी इस्लामिक कानूनों, मान्यताओं पर आधारित है जिसे शरिया कहा जाता है जो इस्लामिक स्कालरों की मानें तो 1400 वर्ष पुराना है। अंग्रेजों के आने के बाद उन्होंने भी अपने शासन के प्रारंभिक काल में इन संहिताओं में कोई बदलाव नहीं किया लेकिन 1840 में एक कानून–एक न्यायालय व्यवस्था के चलते एक कानून बनाने का प्रयास जरूर अंग्रेजों द्वारा किया गाया। जब भारत स्वतंत्र हो रहा था तब संविधान निर्माण सभा ने सविधान के भाग 4 के अनुच्छेद 44 में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में समान नागरिक संहिता शामिल किया।

इसी का आधार लेकर कई बार न्यायलयों के द्वारा यूसीसी को लागू करने का सुझाव सरकारों को दिए गए है। हम देखें कि यूसीसी को लेकर संविधान सभा में भी कुछ को छोड़ दिया जाए तो सभी इसके पक्ष में थे। स्वयं बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर मानते थे कि धर्म को इतना व्यापक क्षेत्राधिकार देना की वह व्यक्ति के पूरे जीवन को नियंत्रित करें और विधायिका को उसमें हस्तक्षेप का कोई अधिकार ना हो कहीं से भी यह न्यायसंगत नहीं होगा। हुसैन इमाम, बोपोकर, महबूब अली बैग, मोहम्मद इस्माइलए, नसीरुद्दीन अहमद जैसे जो मुस्लिम समाज के सदस्य थे उनका मानना था कि विवाह और उत्तराधिकार के मामलों को कुरान और शरीयत के हिसाब से ही तय किया जाना चाहिए।

हालांकि डॉ. अंबेडकर व अन्य सदस्यों के तमाम प्रयासों के बावजूद समान नागरिक संहिता को राज्यों के नीति–निर्देशक तत्वों में ही स्थान मिल पाया और उस पर कोई भी फैसला लेने का अधिकार भविष्य की सरकारों पर छोड़ दिया गया। इसी क्रम में वर्ष 2014 में भाजपा के सत्ता में आने के बाद उसने वर्ष 2018 में विधि आयोग बनाया, इस आयोग ने अपने परामर्श में कहा कि समान नागरिक संहिता को लेकर किसी भी प्रकार की जल्दबाजी ठीक नहीं होगी। आयोग ने कहा कि बहुमत के शोरगुल में बहुलता को नजरंदाज नही किया जा सकता। भारत में लोग अपनी धार्मिक आस्थाओं के प्रति काफी संवेदनशील हैं। धर्म और उससे जुड़ी आस्था ही हमारे देश के विभिन्न पंथों को मानने वालों के जीवन की आधारशिला है। हालांकि व्यक्ति की आस्था के दायरे को लेकर बहस काफी समय से होती रही है। समान नागरिक संहिता के विषय को लेकर भी इसके विरोधी अपनी धार्मिक आस्था का ही तर्क वर्षों से देते रहे हैं। विशेषकर मुस्लिम धर्मगुरुओं का यही तर्क रहा है कि उनके धार्मिक कानून वर्षों पुराने हैं और उनके प्रति उनकी अगाध आस्था है इसीलिए उनसे किसी प्रकार की छेड़छाड़ संविधान द्वारा अनुच्छेद 25 में सुनिश्चित धार्मिक स्वतंत्रता का हनन होगा। देश के विभिन्न समुदायों में शादी–विवाह के अलग–अलग कानून होंगे, तो क्या यह ठीक लगता है कि किसी समुदाय के लोग एक शादी करें और किसी समुदाय के लोगों को चार–चार शादी करने की छूट दी जाए और मुस्लिम महिलाओं के मानवाधिकार का हनन होता रहे और जनसंख्या नियंत्रण के सभी प्रयाशी विफल होता रहे। यदि ऐसा होगा तो यह देश को कहां ले जाएगा, इस तरफ ध्यान देने की जरूरत है। हमारा देश प्रति वर्ष एक नया आस्ट्रेलिया पैदा कर रहा है, अगर समान नागरिक संहिता लागू कर दी जाए, तो कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में उसका असर देश की बढ़ती हुई जनसंख्या पर रोक लगाने हेतु हो सकता है। वहीं मुस्लिम महिलाओं को तमाम इस्लामिक कुप्रथाओं जैसे की हलाला, मूता (अल्पकालिक विवाह) आदि से मुक्ति मिल सकती है वैसे 'तीन तलाक' की कुप्रथा को वर्ष 2019 में संसद ने गैरकानूनी करार देते हुए कानून बना दिया था। आज अच्छा अवसर है समान नागरिक संहिता को लाया जाए जिसका स्वागत संपूर्ण समाज को और सभी धर्मगुरुओं को भी करना चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय कहा करते थे कि भारत की एकीकरण का एक मुख्य उद्देश्य है कि देश के नागरिक धर्म से ऊपर उठकर एक कानून से बंधे हों और बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का भी यही मत था। अतः अब शायद वह समय आ गया है कि हम बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के सपनों को साकार करते हुए समान नागरिक संहिता को सहर्ष स्वीकार करें।

(लेखक सहायक प्रोफेसर, तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक सिद्धांत का केंद्र, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में कार्यरत हैं)

■■

ISSN No. 2581-3528

जातीय जंजाल में उलझा मणिपुर

प्रमोद भार्गव

आपसी वैमन्स्य और जातीय हिंसा का जो दृश्य मणिपुर में दिखा है, उसने संपूर्ण मानवता को झकझोरने का काम किया है। दो महिलाओं की निर्वस्त्र परेड और उनके अंगों के साथ बेशर्मी की हद तक खिलवाड़ ने साफ कर दिया है कि मनुष्य को यदि मनमानी करने की छूट मिलती रही तो उसे असभ्यता की चरम बर्बरता तक पहुंचने में देर नहीं लगेगी ? मनुष्य के अवचेतन में पैठ जमाए बैठी क्रूरता, निर्ममता और यौन हिंसा मर्यादा की सभी सीमाएं लांघकर मानवीय गरिमा को तार–तार कर देंगी। मणिपुर की शर्मसार कर देने वाली इस घटना की हकीकत इसलिए सामने आ गई, क्योंकि हर मुट्ठी में ऑडियो–वीडियो कैमरा है और उसे प्रसारित करने के लिए सोशल मीडिया है। वरना 1979–80 में कश्मीर घाटी में जब हिंदुओं को आतंकवादी–अलगाववादियों ने कश्मीर से बाहर हो जाने की मुनादी पीटी थी, तब महिलाओं के साथ ऐसे ही या इनसे भी बद्तर अत्याचार हुए थे। तब प्रधानमंत्री वीपी सिंह के मुंह पर ताला पड़ गया था और जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला लंदन भाग गए थे। आज देर से ही सही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कहना पड़ा है कि हैवानियत की यह घटना अक्षम्य है। घटना पर पीड़ा भी होती है और क्रोध भी आता है। दोषियों को किसी भी हाल में बख्शा नहीं जाएगा। इस घटना के कारण 140 करोड़ देशवासियों को शर्मसार होना पड़ा है। लेकिन संवैधानिक लोकतंत्र में ढाई माह से कोई राज्य कैसे जल रहा है, इसका जबाव भी प्रधानमंत्री को देना होगा ? आखिरकार इस मुद्दे पर भी विचार करना जरूरी है कि आजादी के बाद से ही यह भूखंड अस्थिर क्यों है ?

हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर सवाल खड़ा करने वाली मणिपुर की आग इतनी बेकाबू हो गई है कि वहां की आबादी में अब यह विभाजन करना नामुमकिन है कि कौन फरियादी है और कौन अपराधी ! क्योंकि दोनों पक्ष ही आगजनी और हिंसा में भागीदार हैं और दोनों ही पीड़ित ? यह भी कहना मुश्किल है कि प्रशासन और पुलिस निष्पक्ष एवं निर्विवादित है ? सच्चाई तो यह है कि पुलिस ने अपने कर्त्तव्य का पालन भी ठीक से नहीं किया। घटना चार मई 2023 की बताई जा रही है। इसके एक–दो दिन पहले ही मणिपुर में तीन विवादित कानूनों को लेकर मैतेई और नगा, कुकी समुदायों के बीच वर्चस्व की लड़ाई छिड़ना शुरू हो गई थी। शुरूआत में ही एक समुदाय के पुरुषों ने शत्रु समुदाय की स्त्रियों की अस्मिता से घिनौने खेल की शुरूआत कर दी थी। पीड़ित कुकी समुदाय की महिलाओं ने अब कार्यवाही आरंभ होने पर बयान दिया है कि करीब एक हजार हथियारबंद लोग उनके गांव में घुसे चले आए। घरों में आग और कत्ल–ए–आम का तांडव रच दिया। जब ये महिलाएं प्राण और आबरू बचाने की कोशिश में सुरक्षित जगह तलाश रही थीं, तब पुलिस ने अपने वाहन में इन्हें शरण दे दी। पुलिस जब महिलाओं को थाने ले जाने लगी, तभी भीड़ वाहन के सामने खड़ी हो गई और बैठी महिलाओं को उनके हवाले करने की मांग करने लगी। आफत में पड़ी पुलिस को खुद की जान बचाने की चिंता हो गई और पुलिस ने लाचार महिलाओं को भीड़ के सुपुर्द कर दिया। फिर भीड़ ने जो किया वह वीडियो के जरिए दो माह बाद अब सामने आया है।

मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह को इस घटना और ऐसी ही वीभत्स सैंकड़ों घटनाओं की जानकारी पहले से ही थी, इसलिए उनसे जब घटना की प्रतिक्रिया ली गई तो उन्होंने सच्चाई उगल भी दी। कहा, 'ऐसी हजारों घटनाएं घटित हो चुकी हैं। उन सबके बारे में जांच चल रही है।' मसलन राजनीति के कुटिल व चतुर खिलाड़ी और घाट–घाट का पानी पी चुके बीरेनसिंह कतई संवेदनशील नहीं हैं। होते तो इस घटना को घटित होने के तुरंत बाद संज्ञान में ले चुके होते। क्योंकि पुलिस स्वयं इस घटना की साक्षी रही थी। इसलिए ऐसा संभव ही नहीं है कि वायरलैस अथवा मोबाइल से शिकार बना ली गई बेबस स्त्रियों की जानकारी विभाग के उच्च–अधिकारियों को न दी गई हो? मुख्यमंत्री का बयान और निर्वस्त्र महिलाओं की सार्वजनिक परेड से जाहिर है कि मणिपुर के दंगाग्रस्त एक बड़े इलाके में कानून व्यवस्था ढाई माह से पूरी तरह ठप है। वैसे भी मणिपुर चीन और म्यांमार के सीमाई क्षेत्र से लगा होने के कारण संवेदनशील क्षेत्र है। स्थानीय उपद्रवियों, घुसपैठियों और नशा कारोबारियों की टोह लेने के लिए इस पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में केंद्रीय व राज्य स्तरीय गुप्तचर संस्थाएं और उनके गुप्तचर बड़ी संख्या में तैनात हैं, आखिर ये क्या कर रहे थे ? इसे राज्य सरकार समेत तमाम शासकीय एजेंसियों की अक्षमता ही कहा जाएगा कि सरेआम घटना भी घट गई और कानों में लाचार स्त्रियों की पुकार भी नहीं गूंजी ?

हालांकि थाउबल जिले में घटी इस घटना की जो अब जानकारियां छनकर

ISSN No. 2581-3528

सामने आ रही हैं, उससे साफ हुआ है कि 4 मई की इस घटना की रिपोर्ट 13 मई को कांग्पोक्पी जिले के साइकुल थाने में शून्य पर दर्ज कर ली गई थी। बाद में 21 जून को प्राथमिकी साईकुल थाने से थाउबल थाने में दर्ज हुई। लेकिन मुख्य आरोपी हेरादास सिंह व तीन अन्य की गिरफ्तारियां 19 जुलाई को वीडियो वायरल होने के 24 घंटे बाद हुईं। तब तक पुलिस इस मामले को दबाए रखने के लिहाज से हाथ पर हाथ धरे बैठी रही। एक लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था में इस तरह की समाज को जलील करने वाली घटना केंद्र व राज्य सरकार के मातहत एजेंसियां महीनों तक छुपाए रखें, तो इसे कानून की असफलता ही माना जाएगा ? सड़क से संसद तक हंगामा खड़ा करने वालों से पूछा जाना चाहिए कि आखिर वे कैसा समाज गढ़ रहे हैं या गढ़ना चाहते हैं? क्योंकि मानवता को कलंकित करने वाली यह इकलौती घटना नहीं है। इसी कालखंड में राजस्थान और छत्तीसगढ़ में महिलाओं के साथ दुष्कर्म और नृशंस हत्या की घटनाएं सामने आई हैं। मध्यप्रदेश में जातीय अहंकार के चलते एक उच्च जाति का युवक आदिवासी युवक पर पेशाब करता है और उसका वीडियो भी बनवाता है। अपने प्रेमियों के साथ अविवाहित सह जीवन में रहते हुए स्त्री को टुकड़ों में बांट देने की हृदय विदारक घटनाएं पूरे देश के सामने आ रही हैं। आखिर क्या कारण है कि शिक्षित और उत्तरोत्तर सभ्य होता जा रहा समाज अराजक एवं हिंसक भी हो रहा है ? इन कारणों की पड़ताल उन्हीं सांसदों को करनी होगी, जो तिल को ताड़ बना देने की मनस्थिति में बुनियादी सवालों और उनके हल को हाशिए पर धकेलते रहे हैं।

आज प्रधानमंत्री कह रहे हैं, दोषियों को बख्शेंगे नहीं। शीर्ष न्यायालय ने मामले को स्वमेव संज्ञान में लेते हुए कहा कि 'वीडियो को देखने के बाद हम बहुत परेशान हैं। महिलाओं को निशाना बनाने की मंजूरी किसी को नहीं दे सकते ? महिलाओं को हिंसा के साधन के रूप में

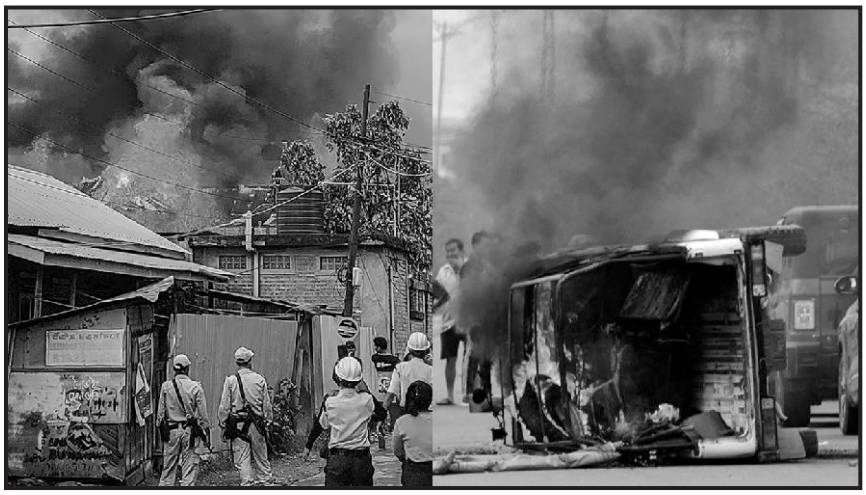

इस्तेमाल करना नामंजूर है।' मुख्यमंत्री बीरेन सिंह ने भी कह दिया कि आपको ग्राउंड पर जाकर रियलिटी देखनी चाहिए। राज्य में ऐसे हजारों मामले दर्ज हैं। इसीलिए तो इंटरनेट बंद किया है ! सरकार गंभीर है, दोषियों को फांसी के तख्ते तक पहुंचाया जाएगा।' इस घटना के ट्वीट वीडियो से भी यह पता चलता है कि मुख्यधारा का मीडिया चाहे प्रिंट हो या टीवी समाचार चैनल मणिपुर में हिंसक व स्त्रीजन्य निर्लज्जता की खबरों तक पहुंच ही नहीं पाया। वैसे भी स्वतंत्रता के बाद से पूर्वोत्तर के राज्य शेष भारत से लगभग अलग–थलग रहे हैं, इसलिए वहां न केवल उग्रवाद को पनपने के नए–नए अवसर मिलते रहे, बल्कि बांग्लादेशी मुस्लिम और म्यांमार के रोहिंग्या घुसपैठिये आग में घी डालने का काम करते रहे हैं। ईसाई मतांतरण के चलते यहां जनसंख्यात्मक घनत्व का संतुलन बिगड़ जाना भी उपद्रव का एक प्रमुख कारण है। चीनी दखल इस उपद्रव को उकसा कर जीवंत बनाए रखने का काम करता है। चीन और म्यांमार यहां अलगाव वादियों को चारा डालते रहे हैं। हालांकि नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से पूर्वोत्तर के सातों राज्यों पर विशेष ध्यान देना शुरू हुआ है। ढ़ांचागत विकास के साथ–साथ आवागमन के साधन बढ़े हैं। पर्यटन के रूप में भी इलाका जाने जाना लगा है। नशे के कारोबार पर लगाम लगी है और आतंकी समूहों को जमींदोज किया है। अफीम की खेती को ऑर्गेनिक खेती में बदलने का काम भी बड़े पैमाने पर हुआ है।

बावजूद यह विचारणीय प्रश्न है कि गृहमंत्री अमित शाह की चार दिवसीय यात्रा के बाद भी शांति स्थापित क्यों नहीं हुई ? इतने लंबे समय से सुरक्षा बल क्या कर रहे हैं। स्थानीय पुलिस क्यों कुछ नहीं कर पा रही है? उपद्रव के दौरान मालखाने से 3 हजार बंदूकें और 6 लाख गोलियां लूट ली गई हैं। 60 हजार से भी ज्यादा लोग विस्थापित होकर या तो मणिपुर में ही हैं, या फिर पड़ोसी राज्यों में शरणागत हैं। न्यायालय समेत सब जानते हैं कि इस फसाद के जड़ में वे तीन कानून हैं, जो मैतेई समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने वाले हैं ? नगा और कुकी समुदाय इन कानूनों को बनाने के बाद से ही विरोध कर रहे हैं। मैतेई और कुकी समुदायों के बीच अब यह विरोध वैमन्स्यता में बदलकर इतना गहरा हो गया है कि समुदायों से जुड़े आम लोग ही नहीं सरकारी नौकरी–पेशा भी जातिगत समूहों में बंट गए हैं। इनमें प्रशासन और पुलिस के अधिकारियों से लेकर वे बुद्धिजीवी भी हैं, जो समरसता की थोथी बातें करते रहे हैं। अतएव अब मणिपुर को गंभीरता से लेते हुए समस्या का समाधान युद्धस्तर पर निकालने की जरूरत है।

(लेखक, साहित्यकार एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं)

ISSN No. 2581-3528

नारी का सम्मान करो

भारत अपनी संस्कृति के कारण विश्वभर में सम्मान पाता है। हमारी अनेकों परम्पराओं से पूरा विश्व प्रेरणा लेता है। नारी का सम्मान करना भारत की विशेष परम्परा है। हमारे देश मे नारी को नारायणी कहा जाता है अर्थात् नारी नारायण से भी ऊपर है। इसी देश में कहा जाता है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहीं देवता निवास करते हैं। परन्तु वर्तमान भारत मे नारी के सम्मान में कमी आई है। एक तरफ जहां चन्द्रयान को चाँद पर भेजने में महिला वैज्ञानिकों का विशेष सहयोग है।वहीं दूसरी तरफ बंगाल व मणिपुर में महिलाओं के साथ हुई घटनाओं ने कहीं न कहीं देश के सम्मान को ठेस पहुँचाई है।मणिपुर काफी समय से हिंसा में जल रहा है।अभी मणिपुर में दो महिलाओं को निर्वस्त्र करके सामूहिक भीड़ के सामने पूरे गांव में घुमाया गया।इन महिलाओं में एक महिला पूर्व सैनिक जो कि कारगिल युद्ध में सहभागी थे उनकी पत्नी हैं।वहीं दूसरी घटना बंगाल की है जहां पर एक राजनीतिक महिलाओं को भी निर्वस्त्र करके सबके सामने पीटा जाता है और फिर पूरे गांव में निर्वस्त्र घुमाया जाता है, यूपी के बाराबंकी जिले में एक सगा भाई अपनी बहिन के सिर को काटकर हाथ मे पकड़कर थाने जाता है। नारी की पूजा करने वाले देश में ऐसी घटनाएं होना देश व समाज के लिये ठीक नही। बंगाल में तो मुख्यमंत्री स्वयं महिला है फिर ऐसी घटना होना चिंता की बात है। निर्वस्त्र घुमाने की घटनाओं पर देश की सरकार व विपक्ष द्वारा एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप ही लगाए जा रहे हैं।ये कोई नही सोच रहा कि ऐसी घटना क्यों हो रही हैं आखिर इनके पीछे है कौन। जिस देश में भगवानों ने भी नारी को स्वयं से ज्यादा महत्व दिया है। उस देश मे ऐसी घटनाएं पुरुष जाति को शर्मिंदा करती हैं।

भारत की परम्परा में पत्नी को छोड़कर हर रिश्ते में महिला के पैर छुए जाते हैं। फिर भी ये प्रश्न सबके सामने आता है कि महिला उत्पीड़न आखिर कब रुकेगा। हम चांद पर जाने के लिए निकल गए परन्तु महिला उत्पीड़न नही रोक पा रहे। दहेज के लिए नारी पर अत्याचार, तलाक व हलाला के नाम पर नारी पर अत्याचार, धार्मिक स्थलों में प्रवेश न देने के नाम पर अत्याचार, गृहणी नाम देकर घर मे रहने पर मजबूर करने के नाम पर अत्याचार, शिक्षा में महिला की सहभागिता भी अभी कम ही है, बलात्कार की घटनाएं भी लगातार देखने व सुनने को मिलती रहती हैं। ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिए समाज को ही आगे आना पड़ेगा। सोचनीय बात है कि इतनी समस्याओं के बाबजूद भी नारी पुरुष के साथ हर काम में बराबरी पर खड़ी है।जिस दिन देश के समस्त व्यक्ति नारी का सम्मान करने लगेंगे उस दिन मणिपुर व बंगाल सहित समस्त घटनाएं स्वयं रुक जाएगी। पराई स्त्री को माता और बहिन समझने वाली सोच समस्त समाज में व्याप्त होनी परम् आवश्यक है।

(ललित शंकर, गाजियाबाद)

स्वतन्त्रता के उद्घोषक – श्री अरविन्द घोष

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में श्री अरविन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका बचपन घोर विदेशी और विधर्मी वातावरण में बीता। पर पूर्वजन्म के संस्कारों के बल पर वे महान आध्यात्मिक पुरुष कहलाये।

उनका जन्म 15 अगस्त, 1872 को डा. कृष्णधन घोष के घर में हुआ था। उन दिनों बंगाल का बुद्धिजीवी और सम्पन्न वर्ग ईसाइयत से अत्यधिक प्रभावित था। वे मानते थे कि हिन्दू धर्म पिछड़ेपन का प्रतीक है। भारतीय परम्पराएँ अन्धविश्वासी और कूपमण्डूक बनाती हैं। जबकि ईसाई धर्म विज्ञान पर आधारित है। अंग्रेजी भाषा और राज्य को ऐसे लोग वरदान मानते थे।

डा. कृष्णधन घोष भी इन्हीं विचारों के समर्थक थे। वे चाहते थे कि उनके बच्चों पर भारत और भारतीयता का जरा भी प्रभाव न पड़े। वे अंग्रेजी में सोचें, बोलें और लिखें। इसलिए उन्होंने अरविन्द को मात्र सात वर्ष की अवस्था में इंग्लैण्ड भेज दिया। अरविन्द असाधारण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने अध्ययन काल में अंग्रेजों के मस्तिष्क का भी आन्तरिक अध्ययन किया। अंग्रेजों के मन में भारतीयों के प्रति भरी द्वेष भावना देखकर उनके मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गयी। उन्होंने तब ही संकल्प लिया कि मैं अपना जीवन अंग्रेजों के चंगुल से भारत को मुक्त करने में लगाऊँगा।

अरविन्द घोष ने क्वीन्स कालिज, कैम्ब्रिज से 1893 में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। इस समय तक वे अंग्रेजी, ग्रीक, लैटिन, फ्रेंच आदि 10 भाषाओं के विद्वान् हो गये थे। इससे पूर्व 1890 में उन्होंने सर्वाधिक प्रतिष्ठित आई.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। अब उनके लिए पद और प्रतिष्ठा के स्वर्णिम द्वार खुले थे। पर अंग्रेजों की नौकरी करने की इच्छा न होने से उन्होंने घुड़सवारी की परीक्षा नहीं दी। यह जान कर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें 'स्वदेश की आत्मा' की संज्ञा दी। इसके बाद वे भारत आ गये।

भारत में 1893 से 1906 तक उन्होंने बड़ोदरा (गुजरात) में रहते हुए राजस्व विभाग, सचिवालय और फिर महाविद्यालय में प्राध्यापक और उपप्राचार्य जैसे स्थानों पर काम किया। यहाँ उन्होंने हिन्दी, संस्कृत, बंगला, गुजराती, मराठी भाषाओं के साथ हिन्दू धर्म एवं संस्कृति का गहरा अध्ययन किया। पर उनके मन में तो क्रान्तिकारी मार्ग से देश को स्वतन्त्र कराने की प्रबल इच्छा काम कर रही थी। अत: वे इसके लिए युवकों को तैयार करने लगे।

अपने विचार युवकों तक पहुँचाने के लिए वे पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखने लगे। वन्दे मातरम्, युगान्तर, इन्दु प्रकाश आदि पत्रों में प्रकाशित उनके लेखों ने युवाओं के मन में हलचल मचा दी। इनमें मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पण की बात कही जाती थी। इन क्रान्तिकारी विचारों से डर कर शासन ने उन्हें अलीपुर बम काण्ड में फँसाकर एक वर्ष का सश्रम कारावास दिया।

कारावास में उन्हें स्वामी विवेकानन्द की वाणी सुनायी दी और भगवान् श्रीकृष्ण से साक्षात्कार हुआ। अब उन्होंने अपने कार्य की दिशा बदल ली और 4 अप्रैल, 1910 को पाण्डिचेरी आ गये। यहाँ वे योग साधना, अध्यात्म चिन्तन और लेखन में डूब गये। 1924 में उनकी आध्यात्मिक उत्तराधिकारी श्रीमाँ का वहाँ आगमन हुआ। 24 नवम्बर, 1926 को उन्हें विशेष सिद्धि की प्राप्ति हुई। इससे उनके शरीर का रंग सुनहरा हो गया।

श्री अरविन्द ने अनेक ग्रन्थों की रचना की। अध्यात्म साधना में डूबे रहते हुए ही 5 दिसम्बर, 1950 को वे अनन्त प्रकाश में लीन हो गये।

प्रेरणा विमर्श 2020 के अवसर पर केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक सिने विमर्श और भारतीय विरासत का विमोचन करते
लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिडला जी, गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा जी,
उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक अन्त्योदय की ओर का विमोचन करते सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले जी,
उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, वरिष्ठ लेखिका अद्वैता काला जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक पत्रकारिता के अग्रदूत का विमोचन करते उत्तर प्रदेश के मा.राज्यपाल श्री राम नाईक जी,
पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक श्री सूर्यप्रकाश टोंक जी, माखनलाल चतुर्वेदी विवि. के पूर्व कुलपति
श्री जगदीश उपासने जी व अन्य अतिथिगण